गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 197
दि. 18.11.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

बांग्लादेश में शेख हसीना को फांसी की सजा छात्र आंदोलन दमन मामले में ऐतिहासिक फैसला

(जीएनएस)। ढाका। बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण (आईसीटी) ने सोमवार को पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को मानवता विरोधी अपराधों का दोषी ठहराते हुए फांसी की सजा सुनाई। यह मामला पिछले साल जुलाई-अगस्त 2024 में हुए उग्र छात्र विरोध प्रदर्शनों से जुड़ा है, जिनमें पुलिस और सुरक्षा बलों की कार्रवाई के दौरान सैकड़ों लोगों की मौत हुई थी। उस समय हसीना देश की प्रधानमंत्री थीं और उन पर आंदोलन पर कठोर कार्रवाई करने का आरोप लगाया गया था। इस प्रकरण में कुल 19 लोगों को दोषी ठहराया गया, जिनमें से हसीना समेत 16 को फांसी की सजा दी गई, जबकि चार अन्य आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। प्रमुख दोषियों में पूर्व गृह मंत्री आसादुज्जमां खान कमाल और पूर्व पुलिस प्रमुख चौधरी मोहम्मद साकिब भी शामिल हैं। न्यायमूर्ति गोलाम मोर्तुजा मजुमदार ने फैसले में कहा कि आरोपियों ने मानवता के खिलाफ गंभीर अपराध किए हैं। हसीना के खिलाफ मुकदमा उनकी अनुपस्थिति में चला क्योंकि वह पिछले साल अगस्त में सत्ता से बेदखल होने के बाद भारत में रह रही हैं। 77 वर्षीय हसीना की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है, हालांकि उनके वकीलों ने सजा के खिलाफ अपील करने की घोषणा की है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने टिप्पणी से इनकार किया है, लेकिन सूत्रों के अनुसार भारत सरकार हसीना को राजनीतिक शरण देने पर विचार कर रही है।

आरोपों का विवरण

इस मामले में हसीना और अन्य आरोपियों पर कई गंभीर आरोप लगे हैं। जुलाई-अगस्त 2024 के छात्र विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस और सुरक्षा बलों द्वारा की गई हिंसा में कई छात्रों और नागरिकों की हत्या के मामले शामिल हैं। विशेष रूप से:

- 16 जुलाई, 2024 को बेगम रोकेया विश्वविद्यालय के सामने अबू सईद की हत्या।
- 5 अगस्त, 2024 को ढाका के चंखरपुल इलाके में छह छात्रों की गोली मारकर हत्या।
- उसी दिन अशुलिया में छह लोगों को गोली मारने और पांच शवों को जलाने का मामला।

अभियोजन पक्ष का आरोप है कि हसीना ने भड़काऊ भाषण दिए और अधिकारियों को हिंसा करने के आदेश दिए। कमाल और मामून पर इन आदेशों को लागू करने का आरोप है। न्यायाधिकरण ने यह भी कहा कि यह आदेश मानवता के खिलाफ अपराध के बराबर थे।

ढाका में सुरक्षा और प्रतिक्रिया

फैसले के बाद ढाका की सड़कों पर जश्न मनाते हुए प्रदर्शनकारी दिखाई दिए। कई ने इसे "इतिहासिक न्याय" करार दिया। वहीं, हसीना की अवामी लीग पार्टी ने फैसले की निंदा करते हुए इसे "राजनीतिक प्रतिशोध" बताया और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपील का एलान किया। संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न मानवाधिकार संगठनों ने मुकदमे की निष्पक्षता पर सवाल उठाए, जबकि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने इसे "ऐतिहासिक फैसला" बताया। इसके मद्देनजर ढाका में राजधानी की सुरक्षा के अभूतपूर्व इंतजाम किए गए हैं। पुलिस और अर्धसैन्य बलों को शहर में तैनात किया गया है, और डीएमपी कमिश्नर ने कहा कि उपद्रवियों को देखते ही कार्रवाई की जाएगी। यह मामला न केवल बांग्लादेश की राजनीति में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा का विषय बन गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक नेताओं और सुरक्षा बलों की कार्रवाई पर अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरणों की पैनी नजर रहती है, और मानवाधिकार उल्लंघन के मामले में कोई भी कानून के ऊपर नहीं है। यदि आप चाहें तो मैं इसे और भी लंबा, पूर्ण-कालिक न्यूज़ स्टाइल में, घटनाओं की पृष्ठभूमि, विरोध प्रदर्शन की विस्तृत कहानी और अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया सहित एक विशेष रिपोर्ट के रूप में लिख सकता हूँ।

सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी का पाकिस्तान को सख्त संदेश: भारत हर परिस्थिति का जवाब देने के लिए तैयार

(जीएनएस)। नई दिल्ली। थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने सोमवार को चाणक्य डिफेंस डायलॉग के दौरान पाकिस्तान और आतंकवाद को लेकर स्पष्ट और कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने ऑपरेशन 'सिंदूर' का उदाहरण देते हुए कहा कि यह केवल 88 घंटों का "ट्रेलर" था और भारत की पूरी सैन्य क्षमता अब भी प्रदर्शित होना बाकी है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा—"अगर पाकिस्तान मौका देगा, तो हम उसे दिखा देंगे कि एक अच्छे पड़ोसी की तरह व्यवहार कैसे किया जाता है।"

जनरल द्विवेदी ने आतंकवाद और उसके समर्थकों के प्रति भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि जो लोग आतंकवादियों का समर्थन करते हैं, उन्हें भी उसी तरह का जवाब मिलेगा। उनका कहना था कि आतंकवाद और बातचीत साथ-साथ नहीं चल सकते। भारत विकास और शांति की बात करता है, लेकिन यदि कोई देश हमारी प्रगति में बाधा डालेगा, तो कार्रवाई अनिवार्य है।

चुनौतियों का सामना करने की रणनीति

जनरल द्विवेदी ने मानेकशॉ सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में बताया कि आज युद्ध बहु-क्षेत्रीय हो चुके हैं—जमीन, हवा, समुद्र, साइबर और अंतरिक्ष तक। ऐसे माहौल में लंबे समय तक चलने वाली लॉजिस्टिक क्षमता और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति भारत की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि 5 अगस्त 2019 के बाद जम्मू-कश्मीर में हालात में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। राजनीतिक स्पष्टता आई है और आतंकवाद में भारी कमी दर्ज की गई है।

मणिपुर में हालात सुधरने के संकेत

मणिपुर की स्थिति पर बोलते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा कि राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद हालात बेहतर हुए हैं। लोगों का सरकार पर भरोसा बढ़ा है और समुदायों के बीच विश्वास मजबूत हुआ है। उन्होंने डूरंड कप और प्रधानमंत्री के हालिया दौरे को राज्य में स्थिरता लौटने के संकेत बताया। उनका कहना था कि सुधार जारी रहा तो राष्ट्रपति का दौरा भी जल्द संभव है। मणिपुर में आशा के दिन लौट रहे हैं और राज्य में स्थिरता धीरे-धीरे बढ़ रही है।

भारत-चीन संबंधों पर दृष्टिकोण

चीन के साथ संबंधों पर सेना प्रमुख ने कहा कि दोनों देशों के नेतृत्व स्तर की बातचीत के बाद पिछले अक्टूबर से हालात में सकारात्मक बदलाव आया है। उन्होंने बताया कि आधुनिक युद्ध की जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए भारत बहु-क्षेत्रीय और दीर्घकालिक युद्ध रणनीति पर लगातार फोकस कर रहा है। जनरल द्विवेदी की बातें यह स्पष्ट करती हैं कि भारत अपनी सुरक्षा, रणनीतिक स्थिति और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए हर परिस्थिति में तैयार है। उन्होंने यह भी संदेश दिया कि किसी भी सीमा पर चुनौतियों का सामना करने और आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई करने की पूरी क्षमता भारतीय सेना में मौजूद है।

दिल्ली लाल किला ब्लास्ट: नदिया जेल से कैदी की कथित साजिश का खुलासा

(जीएनएस)। कोलकाता/नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास हुए घातक विस्फोट के पीछे पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में बंद एक कैदी सबीर अहमद का नाम सामने आया है। मादक पदार्थ तस्करी के आरोप में नदिया जिला जेल में बंद सबीर पर संदेह है कि उसने जेल के भीतर से आतंकियों के नेटवर्क से संपर्क बनाए रखे और कथित तौर पर भारत-विरोधी गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई।

हाल ही में हुए इस धमाके में 13 लोगों की मौत हुई थी। जांच एजेंसियों का मानना है कि यह कोई अकेली घटना नहीं थी, बल्कि एक संगठित आतंकी मॉड्यूल ने इसे अंजाम दिया। प्रारंभिक जांच में यह सामने आया है कि यह मॉड्यूल सोशल मीडिया के विभिन्न समूहों के माध्यम से संचालित होता था। मुख्य संचालक शाहिन साहिद की गिरफ्तारी के बाद पूछताछ में खुलासा हुआ कि जेल में बंद सबीर अहमद भी इन ऑनलाइन समूहों से जुड़ा हुआ था और कथित तौर पर अन्य सदस्यों को भड़काने

का काम करता रहा।

पश्चिम बंगाल की स्टेट एसटीएफ ने 12 नवंबर की रात पलाशीपाड़ा थाना पुलिस के सहयोग से सबीर के भाई फैज़ल अहमद को नलदह क्षेत्र से हिरासत में लिया था। हालांकि, पुलिस ने स्पष्ट नहीं किया कि उसे औपचारिक रूप से गिरफ्तार किया गया या केवल पूछताछ के लिए हिरासत में रखा गया। इसके बाद ही इलाके में सबीर की संदिग्ध भूमिका को लेकर चर्चा तेज हो गई।

स्थानीय लोगों और सबीर के परिवार ने आरोपों को नकारा है। पलाशीपाड़ा निवासी मिथुन शेख ने कहा, "हम सबीर के किसी आतंकी संगठन से जुड़े होने की बात को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। यह आरोप बेबुनियाद हैं।"

कृष्णनगर पुलिस जिला के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) उत्तम घोष ने बताया कि एसटीएफ ने कुछ दिन पहले फैज़ल अहमद को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया था, लेकिन आतंकी गतिविधियों में उसकी वास्तविक भूमिका पर उन्होंने कोई टिप्पणी करने से परहेज किया। उन्होंने कहा कि जांच एजेंसियां यह पता लगाने में लगी हैं कि सबीर जेल में रहते हुए किस तरह सोशल मीडिया समूहों के जरिए सक्रिय रहा और क्या वह दिल्ली धमाके की साजिश का हिस्सा था।

जांच में यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है कि क्या सबीर के माध्यम से आतंकी नेटवर्क ने अन्य सहयोगियों को निर्देशित किया और किस हद तक इस मॉड्यूल की कार्यप्रणाली दिल्ली और अन्य शहरों तक फैली हुई थी। राष्ट्रीय जांच एजेंसियां इस पूरे मामले की गहन जांच में जुटी हैं और शीघ्र ही विस्तृत जानकारी साझा करने की संभावना है।

यह मामला न केवल राजधानी दिल्ली की सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठाता है, बल्कि यह जेलों में कैदियों के नेटवर्किंग और डिजिटल माध्यमों से आतंकी गतिविधियों के खतरे को भी उजागर करता है। जांच एजेंसियों का कहना है कि सोशल मीडिया मॉड्यूल की पूरी श्रृंखला का पता लगाना प्राथमिकता है ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी को नई दिशा : रूसी समुद्री बोर्ड अध्यक्ष ने अजीत डोभाल से की महत्वपूर्ण बैठक

(जीएनएस)। नई दिल्ली। रूस और भारत के बीच रणनीतिक और सुरक्षा सहयोग को और गहराई देने के उद्देश्य से रूसी राष्ट्रपति के करीबी सहयोगी और रूसी समुद्री बोर्ड के अध्यक्ष निकोले पेत्रुशेव आज भारत की राजधानी में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से मुलाकात की। इस दौरान दोनों पक्षों ने समुद्री सुरक्षा, रणनीतिक स्थिरता और द्विपक्षीय सहयोग के विस्तृत मुद्दों पर चर्चा की। साथ ही, भारत के राष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा समन्वयक वाइस एडमिरल बिस्वजीत दासगुप्ता भी बैठक में मौजूद थे, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि समुद्री और रणनीतिक सहयोग दोनों देशों की प्राथमिकताओं में उच्च स्थान रखते हैं। रूसी दूतावास ने इस बैठक की जानकारी सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म एक्स पर साझा की और बताया कि नई दिल्ली में आयोजित यह परामर्श विशेष रूप से समुद्री सहयोग को लेकर आयोजित किया गया था। बैठक में दोनों देशों ने समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में साझा चुनौतियों, नौसैनिक अभ्यास, समुद्री संचार और क्षेत्रीय स्थिरता पर विचार-विमर्श किया। यह पहल दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को और मज़बूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। दूसरी ओर, रूस-भारत विदेश मंत्रियों के बीच मास्को में प्रस्तावित बैठक भी चर्चा का विषय बनी हुई है। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर और उनके रूसी समकक्ष सर्गेई लावरोव की इस बैठक में आगामी राजनीतिक संपर्कों, द्विपक्षीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों, रक्षा, ऊर्जा और व्यापारिक सहयोग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से विचार किया जाएगा। रूसी विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर घोषणा करते हुए बताया कि यह बैठक द्विपक्षीय संबंधों की मजबूती और नई पहलों की रूपरेखा तैयार करने के लिए आयोजित की जा रही है।

विशेषज्ञों का कहना है कि निकोले पेत्रुशेव की भारत यात्रा और इस उच्च स्तरीय बैठक का महत्व इससे और बढ़ जाता है कि अगले महीने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा होने की संभावना है। यह उनकी 2021 के बाद पहली भारत यात्रा होगी, जिसमें सुरक्षा, व्यापार, ऊर्जा और रणनीतिक सहयोग के नए आयाम तय किए जा सकते हैं। पुतिन की यह यात्रा दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे साझेदारी संबंधों को नई दिशा देने के साथ ही अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी सामरिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इस दौरान अधिकारियों ने संकेत दिया कि बैठकें केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि दोनों देशों के बीच वास्तविक रणनीतिक निर्णयों और सहयोग के लिए तैयारियों का हिस्सा हैं। समुद्री सुरक्षा, ऊर्जा संसाधनों की सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता और नौसैनिक अभ्यास जैसे विषय इन बैठकों का मुख्य केंद्र रहे। विशेषज्ञ मानते हैं कि यह पहल भारत-रूस संबंधों के दीर्घकालिक दृष्टिकोण और दोनों देशों की रणनीतिक प्राथमिकताओं को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। पिछले वर्षों में भारत और रूस ने आपसी सहयोग के कई क्षेत्रों में मजबूत साझेदारी स्थापित की है, जिसमें रक्षा, ऊर्जा, विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान शामिल हैं। निकोले पेत्रुशेव की यात्रा और डोभाल से उनकी मुलाकात इस साझेदारी को और गहन बनाने के संकेत हैं। उम्मीद है कि आने वाली मास्को में होने वाली विदेश मंत्रियों की बैठक और पुतिन की भारत यात्रा से दोनों देशों के बीच सहयोग की नई दिशा तय होगी, जो न केवल द्विपक्षीय बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जाएगी।

मदीना के पास भीषण बस हादसा: 42 भारतीय उमराह यात्रियों की मौत की आशंका

(जीएनएस)। रियाद/नई दिल्ली। मक्का से मदीना की ओर जा रहे भारतीय उमराह यात्रियों की बस रविवार देर रात एक भयानक हादसे का शिकार हो गई। भारतीय समयानुसार करीब डेढ़ बजे यह बस एक डीज़ल टैंकर से टकरा गई, जिसके बाद वाहन में आग लग गई। प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार कम से कम 42 लोगों के मारे जाने की आशंका जताई जा रही है। मृतकों में 11 महिलाएं और 10 बच्चे भी शामिल हैं, हालांकि अधिकारियों ने अभी तक अंतिम आंकड़ा साझा नहीं किया है।

घटनास्थल मदीना से लगभग 160 किलोमीटर दूर मुहरास–मुफरीहाट क्षेत्र में स्थित है। घटनास्थल पर लगी तेज़ आग ने बस को पूरी तरह जलाकर खाक कर दिया, जिससे शवों की पहचान करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। केवल एक यात्री को गंभीर रूप से झुलसे हुए हालत में बचाया जा सका, और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलते ही सऊदी नागरिक सुरक्षा, फायर ब्रिगेड और पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई। राहत और बचाव कार्य तेजी से चल रहे हैं। वहीं, भारतीय दूतावास के अधिकारी और उमराह एजेंसियों के प्रतिनिधि पीड़ित यात्रियों के परिजनों से संपर्क स्थापित करने में जुटे हैं, ताकि उनकी पहचान की जा सके और आवश्यक औपचारिकताएं पूरी की जा सकें। दुर्घटना की खबर मिलते ही भारत, विशेषकर तेलंगाना के हैदराबाद में तनाव और चिंता का माहौल बन गया। कई परिवार अपने परिजनों की जानकारी के लिए लगातार ट्रैवल एजेंसियों और सरकारी अधिकारियों से संपर्क कर रहे हैं। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया और कहा कि इस त्रासदी में हैदराबाद के कई लोग भी शामिल हो सकते हैं। वहीं, हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने इसे बेहद दुखद घटना बताते हुए मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

राहत कार्य और जांच अभी जारी है, और अधिकारियों का कहना है कि दुर्घटना के वास्तविक कारणों का पता लगाने के लिए विस्तृत जांच की जाएगी। मक्का से मदीना की यात्रा में यह हादसा उमराह यात्रियों के लिए गंभीर चेतावनी बन गया है कि सड़क सुरक्षा और वाहनों की तकनीकी जांच पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

इस हादसे ने धार्मिक यात्रा की पवित्रता पर भी सवाल खड़ा कर दिया है और पूरी भारतीय समाज में मातम का माहौल फैला है। यात्रियों के परिवारों को तत्काल राहत और सहयोग उपलब्ध कराने के लिए भारतीय दूतावास लगातार प्रयासरत है।

संपादकीय

डिजिटल लत से मुक्ति

कोरोना संकट ने जहां ऑनलाइन शिक्षा के जरिये छात्रों को पढ़ाई का कारगर विकल्प दिया, तो वहीं छात्र-छात्राओं को डिजिटल एडिक्शन का शिकार भी बना दिया। मां-बाप को लगता था कि बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई में व्यस्त हैं, लेकिन बड़ी संख्या में बच्चे ऑनलाइन गेम की लत के शिकार बने हुए थे। हाल के दिनों में पढ़ाई के माध्यमों और जीवनशैली में बदलाव के चलते बच्चे तेजी से डिजिटल लत के शिकार होने लगे हैं। मगर उन्हें ये सब सामान्य लगता था। यदि मां-बाप उन्हें इससे रोकते हैं, तो टोका-टाकी उन्हें बर्दाश्त नहीं होती है। उनका व्यवहार आक्रामक भी होने लगता है। कहीं-कहीं तो मां-बाप की सख्ती के बाद छात्रों के आत्महत्या करने के मामले भी सामने आए। केरल में सिर्फ पलक्कड़ में चार साल के भीतर 41 बच्चों द्वारा आत्महत्या करने के दुखद समाचार आए, जिसने प्रशासन और अभिभावकों की नींद उड़ा दी। डिजिटल लत से बच्चों को मुक्त करने के लिए केरल सरकार ने नई पहल की। पलक्कड़ में छह डि-एडिक्शन सेंटर शुरू किए हैं, जिनमें बच्चों की काउंसलिंग की जाती है। यहां मौजूद साइकोलॉजिस्ट लत के शिकार बच्चों का इंटरनेट एडिक्शन टेस्ट करते हैं, जिससे पता लगाया जाता है कि लत का स्तर क्या है। जिसके आधार पर उनकी काउंसलिंग की जाती है। इसके लिए जहां कुछ एक्सरसाइज करायी जाती हैं, वहीं दूसरी रचनात्मक गतिविधियों से इसे छुड़ाने की कोशिश की जाती है। इस दौरान एक-एक घंटे के दस-पंद्रह सेशन कराये जाते हैं। सुखद है कि चार-पांच सेशन के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

दरअसल, डिजिटल लत के शिकार बच्चों को यह बताना कठिन होता है कि वे डिजिटल लत के शिकार हैं। वे मानने को तैयार ही नहीं होते कि वे कुछ असामान्य कर रहे हैं। उनके लिये यह व्यवहार सामान्य घटनाक्रम है। लेकिन डि-एडिक्शन सेंटर में काउंसलिंग और कुछ सेशन के बाद उन्हें लगता है कि कुछ गड़बड़ जरूर है। दरअसल, सोशल मीडिया का जाल हमारे समाज का ग्रास इतनी तेजी से कर रहा है, बच्चों को लगता ही नहीं कि वे कुछ असामान्य कर रहे हैं। जिसके चलते किशोर, इससे रोकने पर आक्रामक व्यवहार करने लगते हैं। कुछ मामलों में वे अवसादग्रस्त होने लगते हैं या फिर उनके मन में आत्महत्या के विचार आने लगते हैं। यह सुखद है कि पलक्कड़ में पिछले दो साल में साढ़े बारह सौ बच्चों को डिजिटल लत से मुक्ति दिलायी गई है। बच्चे मानसिक रूप से खुद को स्वस्थ महसूस कर रहे हैं। दरअसल, आज जरूरत इस बात की है कि स्कूलों में शिक्षक व अभिभावक पढ़ाई और इंटरनेट के प्रयोग में संतुलन बैठाने का प्रयास करें। सही मायने में यह संकट सिर्फ केरल के किसी एक जिले का ही नहीं है, यह संकट पूरे देश का है। जिसको लेकर केंद्र सरकार को यथाशीघ्र नीति बनाने और डि-एडिक्शन सेंटर खोलने की जरूरत है। इस दिशा में केंद्र व राज्यों के सहयोग से सकारात्मक परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। इस कार्य में स्वयंसेवी संगठनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

अब पश्चिम बंगाल में गूंजेगा जंगलराज का मुद्दा

> "कांग्रेस से निकलीं ममता बनर्जी ने साल 1998 में तृणमूल कांग्रेस का गठन किया। 13 साल बाद 2011 में ममता बनर्जी ने पहली बार पश्चिम बंगाल की सत्ता हासिल की। टीएमसी ने पश्चिम बंगाल में 34 साल पुराने लेफ्ट के किले को ढहाया था। इस चुनाव में टीएमसी को 184 सीटें मिली थीं।

बिहार में 1990-2005 के दौरान लालू यादव-राबड़ी देवी का शासन था। उनके ही शासन को जंगल राज कहा गया। दरअसल 5 अगस्त 1997 को एक याचिका पर सुनवाई के दौरान पटना हाईकोर्ट ने पहली बार बिहार में जंगलराज कहा था। पटना हाईकोर्ट ने तब कहा था- 'बिहार में सरकार नहीं है, बिहार में जंगलराज कायम हो गया है। उस दौर में अपराध के बढ़ते ग्राफ और बाहुबलियों के दबदबे के कारण हाईकोर्ट ने यह टिप्पणी की थी। तब से समय-समय पर बिहार में यह गूंजता रहता है। बिहार में तो जंगल राज अब तकिया कलाम बन गया है। बात-बात में लोग जंगल राज का जिक्र करते हैं। पटना हाईकोर्ट की टिप्पणी के 25 वर्ष बाद वर्ष 2023 में पश्चिम बंगाल के लिए पहली बार इसका प्रयोग हुआ है। संयोगवश बिहार के लिए इसका प्रयोग भी हाईकोर्ट के न्यायाधीश ने ही किया था और अब बंगाल के लिए कलकत्ता हाईकोर्ट ने ही इसका प्रयोग किया है। कलकत्ता हाईकोर्ट में 13 जनवरी 2023 को जस्टिस विश्वजीत बोस के सामने एक शिक्षक के तबादले का मामला सुनवाई के लिए आया। जस्टिस ने कहा कि यह जंगलराज ही होगा कि जिसकी जो मर्जी, उसी के मुताबिक काम होने लगे। ऐसा नहीं चलेगा। जिस स्कूल में शिक्षक नहीं हैं, वहीं तबादला होगा। तबादले के बाद हफ्ते भर में शिक्षकों को ज्वाइनिंग देनी होगी। जंगलराज पर बात करने का ताजा संदर्भ यह है कि बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए को मिली प्रचण्ड जीत के बाद नई दिल्ली में पीएम मोदी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने बिहार की ऐतिहासिक जीत को बंगाल में भाजपा की सफलता का मार्ग बताया। उन्होंने पश्चिम बंगाल में 2026 के विधानसभा चुनाव में जंगलराज समाप्त करने का संकल्प व्यक्त किया है। पीएम मोदी के इस बयान के बड़े मायने हैं। बिहार विधानसभा चुनाव में भी प्रधानमंत्री मोदी ने चुनाव सभाओं में जंगल राज का मुद्दा जोर-शोर से उठाया। अब बारी पश्चिम बंगाल की है। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव अगले साल मार्च-अप्रैल में प्रस्तावित है।

कांग्रेस से निकलीं ममता बनर्जी ने साल 1998 में तृणमूल कांग्रेस का गठन किया। 13 साल बाद 2011 में ममता बनर्जी ने पहली बार पश्चिम बंगाल की सत्ता हासिल की। टीएमसी ने पश्चिम बंगाल में 34 साल पुराने लेफ्ट के किले को ढहाया था। इस चुनाव में टीएमसी को 184 सीटें मिली थीं। ममता बनर्जी पहली बार राज्य की सीएम बनी। 2016 में फिर से ममता ने जीत हासिल की। तब पार्टी को 211 सीटों के साथ मुख्यमंत्री की कुर्सी पर आसीन हुई। 2021 में लगातार तीसरी बार टीएमसी ने जीत हासिल की थी। टीएमसी ने 215 सीटें जीती थीं। ममता बनर्जी की अगुवाई वाली टीएमसी राज्य में जीत की हैट्रिक जड़ चुकी है। 2026 के चुनावों में टीएमसी का मुकाबला बीजेपी से होगा।

पिछले डेढ दशक के टीएमसी के शासन में चुनावी हिंसा से लेकर, विपक्ष खासकर बीजेपी नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ हिंसा और हत्या, महिला शोषण व अत्याचार के साथ भ्रष्टाचार के गंभीर मामले प्रकाश में आए हैं। ममता सरकार संवैधानिक संस्थाओं पर लगातार निशाना साधती रही है। ममता सरकार के कई मंत्री भ्रष्टाचार के मामलों में घिरे हुए हें। पश्चिम बंगाल में सीबीआई ने शिक्षक नियुक्ति में महा घोटाले को उजागर किया है। इसी मामले में राज्य के शिक्षा मंत्री समेत कई अधिकारी आरोपी हैं। कलकत्ता हाईकोर्ट ने तो सैकड़ों नियुक्तियां रद्द भी की हैं। कलकत्ता हाईकोर्ट भी ममता सरकार के खिलाफ लगातार सख्त रुख अपनाए हुए हैं। संदेशखाली हो या फिर अभी हाल ही में मेडिकल कॉलेज की छात्रा से बलात्कार का मामला प्रदेश सरकार के उदासीन रवैये और बयानबाजी से आमजन अंदर ही अंदर बेहद नाराज है।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े बताते हैं कि चुनाव के वक्त सबसे ज्यादा हिंसा पश्चिम बंगाल में ही होती है। दरअसल, इस राज्य में दंभ के स्वरों की गिनती में हिंसा का शीर्ष स्थान है और हिंसा को हमेशा शक्ति प्रदर्शन की श्रेणी में रखा गया। चाहे वह लोकसभा चुनाव हो या पंचायत चुनाव हो! चाहे आम चुनाव हो या उप चुनाव ही क्यों न हो! चाहे वह प्री पोल वायलेंस हो या पोस्ट पोल वायलेंस! पश्चिम बंगाल में चुनाव और हिंसा की गठरी हमेशा बंधी रही।

एनसीआरबी की उसी रिपोर्ट में कहा गया था कि साल 1999 से 2016 के बीच पश्चिम बंगाल में हर साल औसतन 20 राजनीतिक हत्याएं हुई हैं। इनमें सबसे ज्यादा 50 हत्याएं 2009 में हुईं। जबकि, उस साल अगस्त में सीपीएम ने एक पर्चा जारी कर दावा किया था कि 2 मार्च से 21 जुलाई के बीच तृणमूल कांग्रेस ने 62 काडरों की हत्या कर दी। हिंसा का जहां तक सवाल है, खासकर 2018 पंचायत चुनाव से 2021 के विधानसभा चुनाव तक राज्य में काफी हिंसा देखने को मिलीं। खासकर विधानसभा चुनाव के बाद होने वाली हिंसा और कथित राजनीतिक हत्याओं की घटनाओं ने तो काफी सुर्खियां बटोरी थी। फिलहाल पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की टीएमसी का राज है और विपक्ष की भूमिका में बीजेपी है।

पश्चिम बंगाल में 2018 के पंचायत चुनाव के दौरान 23 राजनीतिक हत्याएं हुई थी। केंद्रीय गृह मंत्रालय के आंकड़े प्रमाण के तौर पर पेश किए जाते हैं। एनसीआरबी ने अपनी एक रिपोर्ट में दावा किया था कि साल 2010 से 2019 के बीच राज्य में 161 राजनीतिक हत्याएं हुई और देश में बंगाल इस मामले में पहले स्थान पर था।

2014 के लोकसभा चुनाव में पश्चिम बंगाल की दो लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज करने के बाद बीजेपी ने राज्य में ममता बनर्जी को चुनौती देना शुरू कर दिया। 2016 के चुनाव में हालांकि बीजेपी को महज तीन सीटें मिलीं, लेकिन उसका वोट शेयर 4 फीसदी से बढ़कर 10 फ़ीसदी पर पहुंच गया। बीजेपी को पश्चिम बंगाल में असल कामयाबी 2019 के लोकसभा चुनाव में मिली जब वो राज्य की 42 में 18 सीटों पर जीत दर्ज करने में कामयाब रहीं। लेकिन 2021 में ममता बनर्जी ने अपना किला बचाए रखा और राज्य की 294 विधानसभा सीटों में से 215 पर जीत दर्ज की. हालांकि लेफ्ट और कांग्रेस को पछाड़ते हुए बीजेपी 77 सीटें जीतकर राज्य की मुख्य विपक्षी पार्टी बन गई। 2024 के लोकसभा चुनाव में भी ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में अपनी स्थिति मजबूत की और 42 में से 29 सीटों पर जीत दर्ज की। बीजेपी को 6 सीटों का नुकसान हुआ और वह 12 सीटों पर सिमट गई।

2011 में लेफ्ट सरकार के पतन के बाद लोगों को उम्मीद जगी कि अब सरकार बदलने के बाद पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा खत्म हो जाएगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। पंचायत चुनाव हो या विधानसभा-लोकसभा चुनाव, पश्चिम बंगाल में हिंसा कम नहीं हुई। अब तो बिना किसी चुनाव के भी राजनीतिक कार्यकर्ताओं की हत्या और उन पर हमला आम बात हो गई है। जबकि 1977 में कांग्रेस और 2011 में लेफ्ट फ्रंट सरकार की विदाई के पीछे कई वजहों में मुख्य वजह राजनीतिक हिंसा भी थी। ऐसे में आखिर कैसे बदलेगी यह तस्वीर! बीजेपी पिछले लंबे समय से पश्चिम बंगाल में जंगलराज का मुद्दा उठाती रही है। पीएम के बयान के बाद ये बात साफ हो गई है कि 2026 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी जंगलराज का मुद्दा जोर शोर से उठाएगी। जिस तरह की गंभीर घटनाएं पिछले डेढ़ दशक में पश्चिम बंगाल में घटी हैं, उसके चलते टीएमसी के लिए पलटवार करना आसान नहीं होगा। 2026 में ममता पश्चिम बंगाल की सत्ता से बेदखल होंगी या बीजेपी सरकार बनाएंगी ये तो आने वाले समय ही बताएगा। फिलहाल पीएम मोदी ने पश्चिम बंगाल चुनाव की टोन सेट कर दी है।

प्रेरणा

"कर्म की छाया में लिखा जाता है भाग्य"

मंदिर के बाहर की शाम अद्भुत थी। धूप ढल चुकी थी, किन्तु उसकी लालिमा अभी भी मंदिर की सीढ़ियों को ऐसे रंग रही थी जैसे प्रकृति स्वयं किसी भक्त के चरणों में हल्दी-कुमकुम सजाकर बैठी हो। उसी समय एक धनी व्यक्ति, जिसकी चाल में अहंकार की खनक थी और whose shoes चमकते हुए ऐसे दिख रहे थे मानो अभी-अभी किसी दूकान के काँच से निकले हों—मंदिर के बाहर पहुँचा। उसका मन पूजा से ज़्यादा अपनी वस्तुओं की सुरक्षा को लेकर व्यग्र था। जैसे ही उसने अपने महंगे चमड़े के जूते उतारे, उसकी आँखों में एक ही चिंता उमड़ी—"अगर ये चोरी हो गए तो?"

भाग्य का खेल देखिए, उसकी चिंताग्रस्त नजरें उसी समय मंदिर की सीढ़ियों पर बैठे एक भिखारी पर पड़ीं। वह भिखारी दुबला-पतला, पर चेहरे पर ऐसी शांति थी जैसे जीवन की कठिनाइयों ने उसे तोड़ा नहीं बल्कि भीतर कहीं उसे विरक्त कर दिया हो। धनी व्यक्ति ने बिना किसी हिचक, बिना किसी संकोच के आदेशात्मक स्वर में कहा—"ऐ सुनो, मेरे जूतों का ध्यान रखना, मैं पूजा करके आता हूँ। कोई हाथ भी न लगाए।"

भिखारी ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में अजीब-सी गहराई थी, जैसे इतनी गरीबी के बाद भी वह भीतर से खाली नहीं, बल्कि किसी अदृश्य शक्ति से जुड़ा हुआ हो। उसने धीरे से सिर हिलाया और कहा—"ठीक है साहब, आप निश्चिंत रहिए।"

धनी व्यक्ति निश्चिंत होकर मंदिर के भीतर चला गया। वहाँ घंटियों की गूँज, अगरबत्ती की खुशबू और मंत्रों की ध्वनि देखकर उसका मन प्रसन्न हो गया। उसने बड़े गर्व से सोचा—"मैं कितना धर्मात्मा हूँ, मैं रोज मंदिर आता हूँ, पूजा करता हूँ, दान करता हूँ भगवान मेरी रक्षा अवश्य करेंगे।"

उधर बाहर बैठा भिखारी धीरे-धीरे धनी व्यक्ति के जूतों को एक तरफ खिसकाकर अपने फटे हुए चप्पलों के पास रखकर बैठ गया, जैसे वे जूते उसके नहीं होते हुए भी किसी ज़िम्मेदारी की तरह उसकी गोद में सौंप दिए गए हों। पूजा समाप्त होने के बाद धनी व्यक्ति बाहर आया। उसकी तेज़ चाल देख कर लगता था जैसे वह अपने जूतों की ओर किसी भक्तिभाव से नहीं बल्कि स्वामित्व-भाव से बढ़ रहा हो। उसने देखा कि उसके जूते वहीं रखे हुए हैं, भिखारी पास में बैठा है, शांत, स्थिर, जैसे पूरी दुनिया की हलचल उसके बाहर से गुजर जाती है पर वह भीतर से अडोल है।

धनी व्यक्ति ने राहत की साँस ली, जूते पहने और बिना किसी कृतज्ञता के भाव के, बिना धन्यवाद कहे मोड़ते हुए बोला—"ठीक से ध्यान रखना था बस, अच्छा किया। चलो, ये लो पाँच रुपये।"

उसने जेब से पाँच रुपये का सिक्का निकाला और भिखारी की ओर उछाल दिया। सिक्का भिखारी के पैर के पास गिरा। धनी व्यक्ति ने सोचा कि उसने दया दिखाई है, जबकि सच यह था कि उसकी दया भी उसके अहंकार में लिपटी हुई थी।

भिखारी ने सिक्का उठाया, उसे देखा और मुस्कराते हुए बोला—"साहब, भगवान आपकी पूजा कुबूल करें, लेकिन याद रखना पूजा भगवान तक पहुँचती है, पर कर्म वापस मनुष्य के पास लौटकर आता है।"

धनी व्यक्ति को उसकी बात अटपटी लगी। अहंकार के धुँधले शीशे से देखने वालों को अक्सर सत्य दिखाई नहीं देता। वह बोला—"तुम्हें क्या पता कर्म-भाग्य क्या होता है? तुम्हें तो खुद अपना पेट भरने का भी ठिकाना नहीं। मेरा कर्म मुझे यहाँ तक लाया है और तुम्हारा कर्म तुम्हें वहीं बिठाए है जहाँ तुम हो।"

भिखारी ने कोई प्रतिवाद नहीं किया। उसने सिर्फ एक गहरी साँस ली और बोला—"साहब, भाग्य हमेशा हाथ की लकीरों में नहीं लिखा होता, कभी-कभी दूसरों के साथ किए गए व्यवहार में भी लिखा होता है।"

धनी व्यक्ति हँस दिया और आगे बढ़ गया।

लेकिन कहानी यहीं समाप्त नहीं होती।

कुछ समय बाद वही धनी व्यक्ति एक बड़े व्यावसायिक सौदे में भारी नुकसान में फँस गया। उसकी कंपनी डूबने लगी। कार, बंगला, प्रतिष्ठा—सब धीरे-धीरे हाथ से फिसलने लगे। जिंदगी उसे वहीं ला कर खड़ा कर रही थी जहाँ वह मानता था कि वह कभी नहीं पहुँचेगा। कई महीने संघर्ष में बीते। परिस्थितियाँ ऐसे बदलीं कि एक समय वह भी साधारण बसों में सफर करने लगा, साधारण कपड़ों में रहने लगा। धीरे-धीरे उसकी दुनिया सिमटती गई।

भाग्य जब परखा करता है तो अहंकार की परतें एक-एक करके उतार देता है।

एक दिन शाम को थका हुआ, टूटा हुआ, हताश वह उसी मंदिर के बाहर से गुजर रहा था। वही सीढ़ियाँ, वही घंटियों की आवाज़, वही धूप की हल्की सुगंध—पर आज उसकी स्थिति बदली हुई थी। और तभी उसने देखा, वही भिखारी आज भी वहाँ बैठा है। वही शांति, वही सादगी, वही सौम्यता। जैसे वह समय के तूफानों से भी परे किसी अदृश्य संतोष में जीता हो।

धनी व्यक्ति अब पहले जैसा नहीं रहा था। उसने संकोच और विनम्रता से भिखारी के पास जाकर कहा—"भाई, मुझे याद है एक बार तुमने मेरे जूतों का ध्यान रखा था। मेरे खराब दिनों में कोई मेरा साथ नहीं दे रहा क्या तुम मुझे थोड़ा पानी दे सकते हो?"

भिखारी ने बिना कुछ कहे अपनी छोटी सी बोतल उसे थमा दी।

उस क्षण धनी व्यक्ति की आँखें नम हो गईं। उसे लगने लगा जैसे वह जीवन में पहली बार किसी सच्चे इंसान से मिला हो—जिसके पास देने को संपत्ति नहीं थी, पर संवेदनशीलता भरपूर थी।

भिखारी ने मुस्कराकर कहा—"साहब, कर्म का फल देर-सबेर जरूर मिलता है। लेकिन वो फल सिर्फ धन में नहीं मिलता—दिल की शांति में भी मिलता है। आपने उस दिन मुझे पाँच रुपये दिए थे, पर शायद उसके पीछे का अहंकार भारी था। आज आपने मुझसे पानी माँगा और देखिए, मैं खुश हूँ कि मैं आपकी मदद कर सका। यही असली कर्म है—जहाँ दिल से दिया जाए, बिना किसी तिरस्कार के, बिना किसी अहंकार के।"

धनी व्यक्ति रो पड़ा। उसे महसूस हुआ कि पूजा, दान, दौलत—सब व्यर्थ हैं यदि व्यवहार में विनम्रता नहीं है। उस दिन उसे पहली बार समझ आया कि कर्म ही सच में भाग्य बनाता है—पर वो कर्म जो मंदिर में नहीं, मनुष्यों के साथ किए जाते हैं।

आतंकवाद नहीं, जिहादी हिंसा... राजनीतिक-बौद्धिक वर्ग को तथ्य आधारित समझ की आवश्यकता

कई दशकों से जिहादी हिंसा पर इस कहावत के उलट काम किया जा रहा है कि जहां काम आवे सुई, कहां करे तलवार। जो काम सुई का है, वैचारिक-शैक्षिक संघर्ष का है, उसे तलवार, सैन्य-प्रहार आदि से हराने की कोशिश हो रही है। लोकतांत्रिक विश्व आत्म-प्रवंचना में है। लिहाजा आतंक बरपाने वाले नए-नए दस्ते, संगठन, सरगना इसलिए आते रहते हैं, क्योंकि उन्हें मौत का, तलवार का भय ही नहीं है। केवल तलवार उन पर निष्फल भी रहती है। जिसे आतंकवाद कहा जाता है, उसे आतंकी खुद जिहाद कहते हैं और अपने को मुजाहिदीन। भारत में एक संगठन का नाम ही इंडियन मुजाहिदीन था।

इसने लखनऊ, वाराणसी, जयपुर, दिल्ली, मुंबई आदि शहरों पर अनेक बम-विस्फोट किए, जिनमें सैकड़ों नागरिक मारे गए। जिहाद की संज्ञा भारत में सैकड़ों वर्षों से बार-बार गूंजती रही है। गजनवी से लेकर बाबर जैसे बड़े-बड़े हमलावरों, सुल्तानों, बादशाहों तथा मौदूदी, इकबाल जैसे बड़े-बड़े आलिमों के मुंह और कलम से। फिर भी हमारा राजनीतिक-बौद्धिक वर्ग जिहाद पर चुप रहता है। वह उससे मुकाबला कैसे कर सकता है, जिससे आंख मिलाकर देखने में भी उसे संकोच है?

यदि मुजाहिदीनों द्वारा की गई हिंसा और आतंक का मुकाबला करना है तो वास्तव में जिहाद का सामना करना होगा। उसे उग्रवाद, आतंकवाद, विकृति आदि नाम देना झूठे उपायों की ओर ले जाता है। इसे अफगानिस्तान-पाकिस्तान में अमेरिकी विफलता में बड़े पैमाने पर देख सकते हैं। एक संगठन के बाद, दूसरे पैदा हो जाते हैं। एक सरगना के बाद दूसरा आ जाता है। एक भारतीय इमाम ने कहा था, एक ओसामा मरेगा, तो सौ पैदा होंगे। जिस विश्वास से उन्होंने ऐसा कहा था, उस पर विचार और चोट करनी चाहिए तब समाधान मिलेगा। जिहाद से अनजान लोग ही जिहादियों का सबसे बड़ा कवच हैं।

जिहाद का सिद्धांत मानवता को दो हिस्से में बांटकर देखता है-इस्लाम मानने वाले और नहीं मानने वाले। इसी से इस सिद्धांत की दोहरी नैतिकता बनती है। मुस्लिम के साथ एक व्यवहार और काफिरों के साथ दूसरा। इसी से 'दारुल-इस्लाम' (जहां मुसलमानों का शासन हो) और 'दारुल-हरब' (जहां काफिरों का शासन हो) की धारणा है। इसी कारण यहूदियों से कहा गया था कि सारी दुनिया केवल मुसलमानों के लिए है और वे जान बचाने को इस्लाम कबूल करें। यही दावा राजनीतिक इस्लाम है और इसे लागू करने की गतिविधि जिहाद है।

इतिहास को झुठलाने की मांग करने से लेकर सब पर शरीयत लादने, हलाल थोपने तक उसके असंख्य शांतिपूर्ण रूप हैं। जिहाद सर्वमुखी युद्ध है। सहीह बुखारी में जिहाद संबंधी दो प्रतिशत हदीस कुछ कामों को जिहाद के बराबर बताते हैं, किंतु बाकी 98 प्रतिशत हदीस हथियारबंद हिंसा से संबंधित हैं। हथियारबंद जिहाद ने ही राजनीतिक इस्लाम को सारी सफलता दी है। भारत के विगत हजार वर्ष में इसे असंख्य बार होता देख सकते हैं। मोहम्मद बिन कासिम के सिंध पर हमले से लेकर मुस्लिम लीग के डायरेक्ट एक्शन, पाकिस्तान बनने और कश्मीर से हिंदुओं के सफाए तक यदि कोई शब्द और कर्म समान मिलता है तो वह है जिहाद और हिंसा।

जिहाद में एक पूरी मानसिकता और जीवनशैली है। जिहाद के बारे में प्रामाणिक जानना चाहिए। विशेषकर उन्हें, जिनके विरुद्ध जिहाद का स्थाई आह्वान है और जो इसे सदियों से झेल रहे हैं। बाबर ने भी जिहाद ही लड़ा था। 'बाबरनामा' में भारत पर हमले को जिहाद कहा गया है। बाबर ने खुद को फख्र से 'गाजी' यानी जिहाद लड़ने वाला कहा था। बाबर से लेकर इंडियन मुजाहिदीन तक उन्हीं स्रोतों को अपना मार्गदर्शक मानते हैं, जो मूल इस्लामिक स्रोत हैं। उनके सभी विश्वास, प्रेरणाएं, आदर्श इन्हीं से निःसृत होते हैं। इसीलिए राजनीतिक इस्लाम का रिश्ता बाकी दुनिया से जिहाद या अस्थाई शांति का है। उसके सिद्धांत में कोई तीसरी स्थिति नहीं बताई गई है।

जिहादियों को आतंकवादी कहना अपने को भरमाना है। हमारे राजनीतिक-बौद्धिक वर्ग को तथ्य-आधारित समझ की आवश्यकता है। तब साफ दिखेगा कि जिहाद का सिद्धांत किन-किन बिंदुओं पर कमजोर है, वहीं पर उसे चुनौती देकर हराया जा सकता है। जिहाद को हराना मुख्यतः विचार एवं शिक्षा का क्षेत्र है। इस्लामी दावों, सिद्धांतों का खुला, वैज्ञानिक परीक्षण करके खंडन करना तथा सारी बातें शिक्षा और मीडिया के माध्यम से घर-घर पहुंचाना। इसके प्रति काफिरों की गफलत में ही जिहादी आतंक रूपी तोते की जान छिपी है। राजनीतिक इस्लाम के प्रति सबका भ्रमित रहना ही जिहाद की ताकत है।

इसे इस्लामी नेता बखूबी जानते हैं। इसीलिए अमेरिकी मिसाइलों से ज्यादा तसलीमा नसरीन जैसी लेखिकाओं से डरते हैं। वे काफिरों को भ्रमित रखने के लिए दोहरी नैतिकता के अपने सिद्धांत का प्रयोग करते हैं। उन्हें इस्लामी दावों का झूठा, मीठा अर्थ बताते रहते हैं, जो मुसलमानों को बताए गए अर्थ से भिन्न होता है। इस छल के लिए भी उनके पास एक शब्द है, 'तकिया'। सहीह बुखारी में कहा गया है, ''जिहाद छल है (4:52:268)''-जिहाद इज डिसीट।

मुस्लिम ब्रदरहुड संगठन ने पूरी दुनिया में मिथ्या-प्रचार का व्यवस्थित वैचारिक तंत्र चला रखा है। जिसमें वे काफिर, जिहाद, दारुल-हरब, जिम्मी, हलाल, शरीयत आदि के बारे में झूठे तर्क फैलाते हैं, ताकि गैर-मुस्लिम सरकारें, बुद्धिजीवी, मीडिया आदि अनजान रहें, बल्कि इस्लामियों का बचाव भी करें। जब भी कोई सच बात रखी जाती है तो इस्लामी नेता नाराजगी दिखाते हैं। उसे इस्लाम को बदनाम करना कहकर, धमकी देकर बंद करवाया जाता है, जबकि ठीक वही बात सारे मुजाहिदीन ठसक से कहते हैं।

रिलीजन इस्लाम का बहुत छोटा अंश है, उससे काफिरों को कोई फर्क नहीं पड़ता। इस्लामी मतवाद का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा राजनीतिक है, जिससे काफिर गाफिल रहते हैं। फलतः जिहाद की मानसिकता अबाधित रहती है। उसे हराना ही असली कर्तव्य है। वह मुख्यतः शैक्षिक कार्य है। इसीलिए जिहादी आतंक से लड़ाई मुख्यतः तलवार की नहीं, सुई की है।

अभियान

"अर्जुन की शंका और श्रीकृष्ण का दिव्य उपदेश: कर्म, योग और जीवन का मार्गदर्शन"

कुरुक्षेत्र की भूमि पर उस समय आकाश और पृथ्वी दोनों ही गंभीर भाव से स्तब्ध प्रतीत हो रहे थे। पांडव और कौरव, दोनों पक्ष अपनी-अपनी सेनाओं के साथ युद्ध की तैयारी कर रहे थे। हर तरफ़ युद्ध की गूँज, कवचों की खनक, घोड़ों के कदमों की आवाज़ और वाणों के संचार से वातावरण गंभीर और तनावपूर्ण था। उसी बीच अर्जुन, जो अपने भाइयों और अपने गुरुजनों के साथ युद्ध में खड़ा होने जा रहा था, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक द्वन्द्व से परेशान था। उसका मन युद्ध के कर्तव्य और अपने प्रियजनों के प्रति स्नेह के बीच उलझा हुआ था। उसके हाथ से धनुष खिसक रहा था, मुख सूखा जा रहा था, शरीर में कंपन पैदा हो गया था और मन भ्रमित हो रहा था। उसने श्रीकृष्ण की ओर देखा और बोला, "हे वासुदेव! मैं अपने ही बंधुओं को मारना नहीं चाहता। यह धर्म क्या ऐसा है, जो अपने ही भाइयों, सगे संबंधियों और प्रियजनों को मारने का आदेश देता है? मैं उन्हें मारकर पृथ्वी का राज्य भी प्राप्त नहीं करना चाहता, न ही तीनों लोकों का अधिकार चाहता हूँ। क्या यह सही है?"

अर्जुन की शंका और मोहपाश गहन थे। उसने अपने भीतर युद्ध के प्रति भय, अपराध-बोध और उलझन की गहन भावना को अनुभव किया। तभी श्रीकृष्ण, जो केवल उसका सार्थक मार्गदर्शन करने आए थे, उसे समझाने के लिए उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि जीवन में कर्तव्य और धर्म का पालन सर्वोपरि है। उन्होंने अर्जुन को बताया कि संसार में किसी भी व्यक्ति का कार्य केवल फल की इच्छा से नहीं, बल्कि कर्म के पालन से होना चाहिए। उन्होंने कहा, "हे अर्जुन! कार्य करना ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है। मैं स्वयं भी अनासक्त भाव से कर्म करता हूँ, न किसी फल की इच्छा रखते हुए, न किसी वस्तु की कमी को महसूस करते हुए।"

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग के मार्ग से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि केवल कर्म करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे समर्पण, धैर्य और निरपेक्ष भाव से करना आवश्यक है। यही कर्म का सार है। उन्होंने अर्जुन को यह भी दिखाया कि प्रत्येक कर्म, चाहे वह युद्ध में हो या जीवन के अन्य क्षेत्रों में, मानव की आत्मा को शुद्ध करता है और उसे ईश्वर के निकट ले जाता है।

अर्जुन की संदेह और भ्रम की गहनता देखते हुए श्रीकृष्ण ने उसे विराट रूप में प्रकट किया। उस विराट रूप में अर्जुन ने देखा कि ब्रह्मांड की अग्नि, जल, वायु और पृथ्वी सभी एक साथ सामंजस्य में हैं। मृत्यु और जीवन, विनाश और सृजन, समय और अनंत—सब एक साथ प्रवाहित हो रहे थे। यह दृश्य अर्जुन के मन और अंतरात्मा को इतना प्रभावित कर गया कि उसने ईश्वर की सच्ची महिमा और विराट स्वरूप को देखा।

इस विराट रूप के दर्शन से अर्जुन की अंतरात्मा जागृत हुई और वह अपने कर्तव्य और धर्म के मार्ग पर स्थिर हो गया। उसने समझा कि मोह, भय और लालच केवल भ्रम हैं और सत्य वही है जो कर्म, ज्ञान और भक्ति के मार्ग पर चलता है। श्रीकृष्ण ने उसे समझाया कि जीवन में सही मार्ग का अनुसरण करने वाला व्यक्ति न केवल अपने लिए, बल्कि समाज और मानवता के कल्याण के लिए भी कार्य करता है।

इस दौरान अर्जुन ने महसूस किया कि युद्ध केवल बाहरी संघर्ष नहीं है, बल्कि यह भीतर के संघर्ष का प्रतीक भी है। उसकी शंका और मोह, उसके भीतर के अहंकार और attachments का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। श्रीकृष्ण ने उसे यह भी समझाया कि मनुष्य की सच्ची शक्ति उसके कर्म, उसकी बुद्धि और उसकी भक्ति में निहित होती है।

उन्होंने अर्जुन को यह शिक्षा दी कि जो व्यक्ति अपने कर्मों में निष्ठावान है और अनासक्त भाव से कर्म करता है, वही सच्चे अर्थ में जीवन में विजय प्राप्त करता है।

गीता का उपदेश केवल युद्ध के लिए नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह बताता है कि किसी भी परिस्थिति में भय, मोह और भ्रम में नहीं रहकर अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करना चाहिए। जीवन में संतुलन, संयम और कर्मयोग का पालन करना ही व्यक्ति को आत्मज्ञान और मोक्ष की ओर ले जाता है। अर्जुन की शंका और उसका भय केवल उसे असफलता और अधर्म की ओर ले जा सकते थे, पर श्रीकृष्ण के दिव्य उपदेश ने उसे सच्चे मार्ग पर चलने के लिए तैयार किया।

युद्ध के दिन अर्जुन ने अपने भीतर एक नई चेतना अनुभव की। उसे समझ आया कि सच्चा वीर वही है, जो अपने भय और मोह को परास्त करके अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करता है। यही गीता का वास्तविक संदेश है—जो समय, परिस्थिति और स्थान की सीमाओं से परे है। अर्जुन के लिए यह केवल युद्ध का दिन नहीं था, बल्कि आत्मा के जागरण और कर्म के महत्व को समझने का दिन था।

आज भी जब हम गीता जयंती मनाते हैं, तब हमें याद रखना चाहिए कि यह केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि हर मानव जीवन में कर्म, योग और भक्ति के मार्गदर्शन का प्रतीक है। अर्जुन और श्रीकृष्ण के संवाद से हमें यह सीख मिलती है कि जीवन का वास्तविक अर्थ केवल भौतिक सफलता में नहीं, बल्कि कर्म, ज्ञान, भक्ति और आत्म-साक्षात्कार में निहित है। यही कारण है कि गीता का संदेश सदियों से जीवित है और आने वाले समय में भी मानव जीवन की दिशा निर्धारित करता रहेगा।

गीता की शिक्षा हमें यह भी याद दिलाती है कि अपने भीतर की शक्तियों को पहचानना, अपने संदेह और मोह से पार पाना और जीवन के प्रत्येक क्षण में धर्म और कर्तव्य के मार्ग पर चलना ही सच्चा जीवन है। अर्जुन की शंका और श्रीकृष्ण के दिव्य उपदेश ने दिखाया कि जीवन में हर व्यक्ति को अपने कर्म, ज्ञान और भक्ति के माध्यम से अपने और समाज के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। यही गीता का वास्तविक और सार्वभौमिक संदेश है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में अहमदाबाद के घाटलोडिया विधानसभा क्षेत्र में 'सरदार@150 यूनिटी मार्च' आयोजित

▸▸ मुख्यमंत्री ने यूनिटी मार्च-पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

▸▸ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा, प्रभारी मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल और राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला सहित कई गणमान्य लोगों की विशेष उपस्थिति

▸▸ स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की सामूहिक शपथ ली गई

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸ सरदार साहब की 150वीं जयंती पर 'एकता मंत्र' को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विधानसभा क्षेत्रवार यूनिटी मार्च का आयोजन

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 को निरस्त कर भारत को एक और अखंड बनाया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भारत की एकता और अखंडता के प्रतीक और आधुनिक भारत के शिल्पकार सरदार वल्लभभाई पटेल के 150वें जयंती समारोह के अंतर्गत घाटलोडिया विधानसभा क्षेत्र की 'सरदार@150 यूनिटी मार्च' पदयात्रा को सोमवार को अहमदाबाद के आंबली इलाके से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से देश भर में मनाई जा रही सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में जन-जन में राष्ट्रीय एकता का भाव उजागर करने के लिए यूनिटी मार्च आयोजित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने 9 नवंबर को जूनागढ़ से इस राज्यव्यापी यूनिटी मार्च का शुभारंभ करने के बाद, विधानसभा क्षेत्रवार इस मार्च के आयोजन के तहत सोमवार सुबह अपने घाटलोडिया विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में यूनिटी मार्च को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर कहा कि आजादी के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल ने देश के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में 562 रियासतों का एकीकरण कर एक और अखंड भारत का निर्माण किया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एकता के उसी मंत्र को 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' से साकार किया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री और हमारे गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाकर कटक से कच्छ और कश्मीर से कन्याकुमार तक एक भारत बनाया है।

उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री ने दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के निर्माण के जरिए सरदार पटेल को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि दी है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की यह प्रतिमा भारत के सामर्थ्य और गौरवशाली इतिहास का श्रेष्ठ प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने यह स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश में विकास की राजनीति स्थापित की है, उनके नेतृत्व में 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' मंत्र के माध्यम से भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक ताकत बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री उपस्थित सभी लोगों से आह्वान करते हुए कहा कि हम सभी सरदार साहब को याद करके और स्वदेशी को जीवन का एक हिस्सा बनाकर विकसित भारत का निर्माण करें। उन्होंने कहा कि हम सभी एक और नेक बनकर 2047 तक विकसित भारत बनाने के संकल्प को साकार करने के लिए कटिबद्ध बनें।

इस यूनिटी मार्च में शामिल सभी लोगों ने स्वदेशी को अपनाने और आत्मनिर्भर भारत के लिए योगदान देने की सामूहिक शपथ ली।

अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन ने स्वागत भाषण में कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में आयोजित यूनिटी मार्च सरदार पटेल को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा, प्रभारी मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल, राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, सांसद श्री दिनेशभाई मकवाणा और श्री नरहरिभाई अमीन, महानगर प्रभारी श्री रजनीभाई पटेल, शहर के विधायक, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह, बाल संरक्षण आयोग की चेयरमैन श्रीमती धर्मिष्ठाबेन गज्जर, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, शहर पुलिस आयुक्त श्री जी.एस. मलिक, जिला कलेक्टर श्री सुजीत कुमार, जिला विकास अधिकारी श्री विदेह खरे, कई साधु-संत, पूर्व राज परिवारों के सदस्य, पार्षदगण, पार्टी के पदाधिकारी, युवाओं और विद्यार्थियों सहित बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

गांधीनगर में सीएम फेलोशिप युवाओं की एक दिवसीय कार्यशाला संपन्न

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वरिष्ठ सचिवों के अनुभव और सीएम फेलोशिप में शामिल युवाओं के ज्ञान एवं कौशल के समन्वय से आम आदमी की सुख-सुविधा के साथ-साथ कारोबार सुगमता को और मजबूत बनाने का संकल्प व्यक्त किया

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रशासनिक व्यवस्थाओं में प्रतिभाशाली युवाशक्ति के अभिनव विचारों के उपयोग के लिए 2009 में शुरू किया गया सीएम फेलोशिप प्रोग्राम सुशासन के लिए महत्वपूर्ण बना है

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य की प्रशासनिक व्यवस्थाओं में परिवर्तनकारी बदलावों के जरिए आम आदमी की सुविधा और खुशहाली के कार्यों के साथ ही ईज ऑफ डूइंग बिजनेस यानी कारोबार सुगमता को और अधिक मजबूत बनाने का संकल्प व्यक्त किया है।

इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि हमें इस संकल्प को युवाशक्ति के ज्ञान-कौशल और वरिष्ठ सचिवों के अनुभव के समन्वय से साकार करना है।

उन्होंने यह बात सीएम फेलोशिप के अंतर्गत चयनित एवं राज्य शासन में विविध विभागों में कार्यरत 24 सीएम फेलो की एक दिवसीय कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान 2009 में सीएम फेलोशिप कार्यक्रम की शुरुआत करके प्रतिभाशाली युवाओं के अभिनव विचारों के साथ देश को सुशासन की एक नई राह दिखाई है। उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा अपनाए गए दृष्टिकोण को, प्रशासनिक व्यवस्था को और अधिक जनाभिमुख बनाकर टेक्नोलॉजी के उपयोग से जनहित के कार्यों के लिए पथप्रदर्शक करार दिया।

मुख्यमंत्री ने इस मौके पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रेरक वाक्य "हम सरकार चलाने के लिए नहीं, बल्कि देश में बदलाव लाने के उद्देश्य के साथ काम करते हैं" का भी उल्लेख किया।

उन्होंने साफ तौर पर कहा कि प्रधानमंत्री ने इस बात को चरितार्थ करने के लिए देश में अनेक बदलाव लाए हैं। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री ने डिजिटल भारत के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों तक डिजिटल टेक्नोलॉजी पहुंचाकर लोगों का जीवन अधिक आसान बनाया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा 2009 में इस विचार के साथ कि 'दुनिया में जो कुछ भी श्रेष्ठ हो, वह गुजरात में भी हो' शुरू किया गया सीएम फेलोशिप कार्यक्रम, आज राज्य प्रशासन में प्रतिभाशाली युवाओं के योगदान का सर्वश्रेष्ठ मंच बन गया है।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को साकार करने में इन व्यवस्थाओं के माध्यम से गुजरात को अग्रणी रखने के लिए सभी के सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की।

इस एक दिवसीय कार्यशाला की शुरुआत में मुख्यमंत्री की उपस्थिति में सरदार पटेल लोक प्रशासन संस्थान (स्पीपा) और भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम)-इंदौर के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। स्पीपा के महानिदेशक श्री हरित शुक्ला और आईआईएम इंदौर के निदेशक श्री हिमांशु सिंह ने एमओयू का आदान-प्रदान किया। ये एमओयू विभिन्न 11 विषयों में लोक नीति प्रबंधन (पब्लिक पॉलिसी मैनेजमेंट) के संदर्भ में क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयुक्त आयोजन में उपयोगी साबित होगा।

मुख्य सचिव श्री एम.के. दास ने सीएम फेलोशिप के साथी युवाओं के योगदान तथा शोध एवं केस स्टडीज को सुशासन के लिए उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में सरदार पटेल गुड गवर्नेंस सीएम फेलोशिप को और गति मिली है।

इस एक दिवसीय कार्यशाला में मुख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार डॉ. हसमुख अढिया और राज्य सरकार के वरिष्ठ सचिवों ने सीएम फेलो युवाओं को मार्गदर्शन दिया। सीएम फेलो युवाओं ने इस अवसर पर अपने प्रेजेंटेशन दिए और बेस्ट प्रैक्टिसेज यानी सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा किया।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार डॉ. हसमुख अढिया, राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ सचिव, मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह और सचिव डॉ. विक्रांत पांडे सहित सीएम फेलो मौजूद रहे।

भारत पर्व-2025, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, एकता नगर : तेलंगाना की चेरियाल पेंटिंग ने मोहा आगंतुकों का मन

▸▸ तेलंगाना की चेरियाल चित्रकार वंशिथा भारत पर्व मंच के जरिए देश की समृद्ध कला विरासत को उजागर कर रही हैं

▸▸ 24 वर्षीय वंशिथा चेरियाल पेंटिंग के माध्यम से दर्शाती हैं पौराणिक कथाएं

▸▸ तेलंगाना की चेरियाल पेंटिंग को मिला है जीआई टैग, कलाकार प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर हिंदू पौराणिक कथाओं का करते हैं वर्णन

24 वर्षीय कलाकार की चेरियाल पेंटिंग तेलंगाना की सांस्कृतिक विरासत को उजागर कर रही है

तेलंगाना की 24 वर्षीय चेरियाल कलाकार सी.एच. वंशिथा और उनकी माता अपने राज्य की संस्कृति की सदियों पुरानी कहानियों को चेरियाल पेंटिंग के माध्यम से प्रस्तुत करने और इस कला को संरक्षित करने के मिशन पर है। वे एकता नगर में भारत पर्व के माध्यम से इस मिशन को आगे बढ़ा रही हैं। उल्लेखनीय है कि चेरियाल कला तेलंगाना के चेरियाल गांव की एक पारंपरिक स्क्रॉल पेंटिंग शैली है। यह दृश्य कला के माध्यम से कहानी कहने की एक कला है। इसमें चित्रों का उपयोग पारंपरिक कहानी कहने के लिए किया जाता है। ये पेंटिंग हिंदू पौराणिक कथाओं, लोककथाओं और ग्रामीण जीवन के दृश्यों को दर्शाती है। इस कला में जीवंत और जटिल कथात्मक चित्रों को खादी के कपड़े पर उकेरा जाता है। इसमें इमली के बीज के पेस्ट, चावल के स्टार्च और चाक पावडर के मिश्रण का उपयोग होता है, जो पेंटिंग के लिए एक मजबूत आधार तैयार करता है।

मंत्रमुग्ध करने वाली तेलंगाना की चेरियाल स्क्रॉल पेंटिंग को मिला है जीआई टैग

तेलंगाना की चेरियाल पेंटिंग सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक सुंदर माध्यम है, जिसके रंग देखने वालों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। इस कला को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग मिला है। चेरियाल पेंटिंग की विशेषता इसके प्राकृतिक रंग हैं। कलाकार पेंटिंग बनाने के लिए खनिज, फूल और समुद्री सीपियों आदि से प्राप्त रंगों का उपयोग करते हैं और उन्हें हस्तनिर्मित ब्रश के जरिए कपड़े पर उकेरते हैं। इस पेंटिंग में रामायण, महाभारत और स्थानीय लोक कथाओं जैसे भारतीय महाकाव्यों के दृश्यों को अद्भुत तरीके से चित्रित किया जाता है। प्रत्येक चित्र एक जीवंत दृश्य कहानी की तरह प्रकट होता है, जो ग्रामीण तेलंगाना की समृद्ध परंपराओं और जीवन शैली का वर्णन करता है। पृष्ठभूमि में चटक लाल रंग, चेहरे की अभिव्यक्ति और बोल्ड आउटलाइन चेरियाल पेंटिंग की पहचान हैं। पारंपरिक रूप से, लोक गायकों और कलाकारों द्वारा इन चित्रों का उपयोग अपनी कहानियां सुनाने के लिए किया जाता है, लेकिन आज इस हस्तकला का विस्तार वॉल हैंगिंग्स (फोटोफ्रेम या पोस्टर्स), मास्क और सजावटी कलाकृतियों की वस्तुओं तक हो गया है। इस हस्तकला को नक्काशी कलाकारों (चेरियाल चित्रकारों) की पीढ़ियां आगे बढ़ा रही हैं, जो सदियों पुरानी तकनीकों को संरक्षित रखते हुए उसमें नवाचार कर रहे हैं। भारत पर्व में बड़ी संख्या में आगंतुकों ने चेरियाल पेंटिंग को बड़ी उत्सुकता के साथ देखा और पौराणिक कथाओं को दर्शाने वाले चित्रों का वर्णन भी सुना। पहली बार भारत पर्व जैसे कार्यक्रम में शामिल होने वाली और बी.टेक. की डिग्री हासिल कर चुकी सी.एच. वंशिथा ने कहा, "मैं बचपन से इस कला के साथ पली-बढ़ी हूं। मेरी माता पिछले 15 वर्षों से इस कला के प्रति समर्पित हैं और मैं गत चार वर्षों से इस कला से जुड़ी हुई हूं। हमारे द्वारा बनाए गए हरेक चित्र में हमारे देवताओं और पूर्वजों की कथाएं हैं। हमारा लक्ष्य इस कला के माध्यम से दुनिया को यह बताना है कि हमारी विरासत कितनी समृद्ध है।"

(जीएनएस)। गांधीनगर : सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर एकता नगर में दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' परिसर में भारत सरकार और गुजरात सरकार के संयुक्त तत्वावधान में 'भारत पर्व-2025' का भव्य आयोजन किया गया है। भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति, कला और हस्तकला को प्रदर्शित करने वाला यह जीवंत उत्सव अनेकता में एकता की झलक प्रस्तुत करता है। भारत पर्व में विभिन्न राज्यों की ओर से अपनी विशिष्ट विरासत का प्रदर्शन देखने को मिल रहा है, जिनमें तेलंगाना की अनोखी चेरियाल पेंटिंग को दर्शाने वाला स्टॉल अपने रंगों, कहानियों और इतिहास के लिए सबसे अलग नजर आ रहा है।

भारत पर्व : परंपरा, संदेश और रचनात्मकता का अनोखा समन्वय

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में आयोजित भारत पर्व-2025 देश भर के कलाकारों और कारीगरों के लिए उनकी क्षेत्रीय परंपरा और धरोहर को प्रस्तुत करने का एक सशक्त मंच है। इस मंच के माध्यम से तेलंगाना की 24 वर्षीय युवती ने अपनी हस्तकला के जरिए भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को प्रतिबिंबित किया है। डिजिटल आर्ट और मॉडर्न स्टोरीटेलिंग (कहानी कहने की कला) के इस युग में वंशिथा चेरियाल पेंटिंग जैसी कला की विरासत को आगे बढ़ा रही हैं।

अहमदाबाद मण्डल पर भगवान बिरसा मुंडा जयंती एवं जनजातीय गौरव दिवस का उत्साहपूर्वक आयोजन

(जीएनएस)। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर अहमदाबाद मंडल में जनजातीय गौरव दिवस बड़े हर्षोल्लास और गरिमा के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, अहमदाबाद में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं जननायक भगवान बिरसा मुंडा जी को श्रद्धापूर्वक नमन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने भगवान बिरसा मुंडा जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके पश्चात उनके जीवन-वृत, संघर्ष तथा स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए अमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला गया।

अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने कहा कि "भगवान बिरसा मुंडा ने मात्र 25 वर्ष की आयु में वह कार्य कर दिखाया, जो बड़े-बड़े लोग भी नहीं कर पाते। उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष कर आदिवासी समाज को एकजुट किया और समाज सुधार एवं राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए विशिष्ट योगदान दिया।" उन्होंने आगे कहा कि बिरसा मुंडा का जीवन संघर्ष, आत्मसम्मान और देशभक्ति का प्रेरणास्रोत है, जो वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ियों को निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करेगा। इस अवसर पर वक्ताओं ने भगवान बिरसा मुंडा के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान तथा आदिवासी समाज के उत्थान हेतु किए गए उनके उल्लेखनीय कार्यों पर विस्तृत रूप से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान बिरसा मुंडा की जीवनी पर आधारित पुस्तिका का वितरण भी किया गया।

कार्यक्रम में मण्डल के रेल अधिकारी, कर्मचारी, विभिन्न एसोसिएशनों एवं ट्रेड यूनियनों के पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कमज़ोरी के कारण अक्टूबर में निर्यात में गिरावट भारत का व्यापार घाटा बढ़ा: फियो अध्यक्ष, एस सी रल्हन

(जीएनएस)। फियो अध्यक्ष, श्री एस सी रल्हन ने अक्टूबर के व्यापार आंकड़ों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि नवीनतम आंकड़े मिश्रित रुझान दर्शाते हैं, जिसमें कुल निर्यात में मामूली गिरावट और आयात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप व्यापार घाटा बढ़ा है। अक्टूबर 2025 में भारत का कुल निर्यात 72.89 अरब अमेरिकी डॉलर रहा, जो अक्टूबर 2024 में दर्ज 73.39 अरब अमेरिकी डॉलर से थोड़ा कम है। हालाँकि, आयात पिछले वर्ष के 82.44 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 94.70 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया, जिससे इस महीने कुल व्यापार घाटा 21.80 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया।

श्री रल्हन ने इस बात पर प्रकाश डाला कि व्यापारिक निर्यात में गिरावट—जो एक वर्ष पहले अक्टूबर 2025 में 38.98 बिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर 34.38 बिलियन अमेरिकी डॉलर रह गई—मुख्य रूप से कई प्रमुख निर्यात क्षेत्रों में तीव्र गिरावट के कारण हुई। इंजीनियरिंग सामान, पेट्रोलियम उत्पाद, रत्न एवं आभूषण, परिधान एवं वस्त्र, जैविक एवं अकार्बनिक रसायन, फार्मास्यूटिकल्स और प्लास्टिक के सामान जैसे प्रमुख सेक्टरों में उल्लेखनीय दबाव देखा गया, जिससे समग्र निर्यात प्रदर्शन प्रभावित हुआ। इस बीच, व्यापारिक आयात अक्टूबर 2024 के 65.21 बिलियन अमेरिकी डॉलर की तुलना में बढ़कर 76.06 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जिससे व्यापारिक व्यापार घाटा 41.68 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।

फियो प्रमुख ने कहा कि निर्यात में यह दबाव व्यापक वैश्विक आर्थिक मंदी को दर्शाता है, जो भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं, कई प्रमुख बाजारों में कम माँग और वस्तुओं की कीमतों में लगातार उतार-चढ़ाव से चिह्नित है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, भारतीय निर्यातकों ने लचीलापन दिखाया है, जबकि बढ़ी हुई लॉजिस्टिक्स लागत और उतार-चढ़ाव वाली इनपुट कीमतें प्रतिस्पर्धात्मकता को चुनौती दे रही हैं।

उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि आयात में वृद्धि—विशेषकर महत्वपूर्ण इनपुट और घटकों की—भारतीय विनिर्माण क्षेत्र की आयातित कच्चे माल पर निरंतर निर्भरता को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करना, समय पर कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित करना और प्रमुख क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता के प्रयासों में तेजी लाना प्राथमिकता वाले क्षेत्र बने रहने चाहिए।

अप्रैल-अक्टूबर 2025 के लिए क्षेत्रीय प्रदर्शन रुझानों पर प्रकाश डालते हुए, श्री रल्हन ने बताया कि भारत की शीर्ष 10 निर्यात वस्तुओं में इंजीनियरिंग सामान, पेट्रोलियम उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक सामान, दवाएं और फार्मास्यूटिकल्स, रत्न और आभूषण, कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन, सभी प्रकार के रेडीमेड वस्त्र, हथकरघा उत्पादों सहित सूती धागे/कपड़े/मेड-अप, चावल और प्लास्टिक तथा लिनोलियम उत्पाद शामिल हैं।

यात के संदर्भ में, इसी अवधि के दौरान शीर्ष 10 वस्तुओं में पेट्रोलियम, कच्चा तेल और उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक सामान, सोना, मशीनरी और विद्युत उत्पाद, परिवहन उपकरण, कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन, अलौह धातुएँ, कोयला और संबंधित उत्पाद, प्लास्टिक सामग्री, और लोहा एवं इस्पात शामिल थे।

बढ़ते व्यापार अंतर पर चिंता व्यक्त करते हुए, श्री रल्हन ने निर्णायक और समय पर नीतिगत हस्तक्षेप का आग्रह किया। उन्होंने निर्यात समर्थन उपायों को बढ़ाने, विभिन्न योजनाओं के तहत लाभों को शीघ्र जारी करने, बेहतर और किफायती ऋण पहुँच और अनुपालन बोझ को कम करने की आवश्यकता दोहराई ताकि निर्यातक चुनौतीपूर्ण वैश्विक परिवेश में प्रतिस्पर्धी बने रह सकें। श्री रल्हन ने निर्यात संवर्धन मिशन और निर्यातकों के लिए ऋण गारंटी योजना के तहत सरकार द्वारा निरंतर समर्थन के लिए, साथ ही भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा समय पर व्यापार संबंधी राहत उपायों के लिए भी आभार व्यक्त किया, जिनमें निर्यात प्राप्ति अवधि का विस्तार, अग्रिम भुगतान निर्यात के लिए शिपमेंट की समय-सीमा में वृद्धि, प्रभावित सेक्टरों के लिए ऋण चुकौती में राहत और निर्यात ऋण चुकौती में छूट शामिल हैं। हालाँकि, उन्होंने रिज़र्व बैंक से अनुरोध किया कि वह पारस्परिक शुल्क से प्रभावित सभी निर्यातकों को राहत प्रदान करे, न कि केवल विशिष्ट सेक्टरों तक सीमित रखे।

फियो को उम्मीद है कि निरंतर नीतिगत समर्थन और वैश्विक माँग स्थितियों में क्रमिक सुधार के साथ, भारत का निर्यात क्षेत्र आने वाले महीनों में मजबूती से उबरने की स्थिति में है।

दिव्यांगजनों के लिए नई निःशुल्क सहायता सेवा

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल ने रेलवे स्टेशनों पर दिव्यांगजनों के लिए एक नई निःशुल्क सहायता सेवा शुरू की है, जिसका उद्देश्य रेल यात्रा को उनके लिए अधिक सहज, सुरक्षित और सुलभ बनाना है। पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार मंडल के वाणिज्य विभाग द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के तहत आर आर केबल फाउंडेशन के सहयोग से यह महत्वपूर्ण पहल की गई है।

"सुगम्य भारत अभियान" के अंतर्गत वडोदरा मंडल के 66 स्टेशनों पर कुल 172 क्रचेस (86 जोड़ी) प्रदान किए गए हैं। ये क्रचेस रेलवे स्टेशनों पर सहायता की आवश्यकता वाले दिव्यांग यात्रियों को निःशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे।

यह पहल न केवल दिव्यांगजनों की सुविधा बढ़ाएगी, बल्कि रेलवे की सामाजिक जिम्मेदारी और सहयोगी संस्थाओं के सकारात्मक योगदान को भी दर्शाती है। यह सेवा दिव्यांग यात्रियों के आत्मविश्वास और यात्रा अनुभव को और अधिक बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

अहमदाबाद मंडल के साणंद से पहली रेफ्रिजरेटेड कंटेनर रैक पिपावाव पोर्ट के लिए रवाना

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मण्डल के साणंद से दिनांक 17.11.2025 को M/s हस्ती पेट्रोकेमिकल्स एंड शिपिंग लिमिटेड की पहली रेफ्रिजरेटेड (रीफ़र) कंटेनर रैक (MHPL) (थार ड्राई पोर्ट) फ्रेट टर्मिनल साणंद से मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह अहम पड़ाव मंडल के कोल्ड-चेन लॉजिस्टिक्स को सुदृढ़ बनाने तथा माल ढुलाई प्रणाली में दक्षता बढ़ाने के प्रति निरंतर प्रयासों का एक महत्वपूर्ण संकेत है।

यह रीफ़र कंटेनर रैक पिपावाव पोर्ट के लिए प्रस्थान कर रही है, जो क्षेत्र में बहु-मोडल कनेक्टिविटी को मजबूत करेगी तथा तापमान-संवेदनशील माल की ढुलाई के लिए उद्योगों को एक विश्वसनीय और कुशल विकल्प प्रदान करेगी। यह पहल अहमदाबाद मंडल की बिजनेस डेवलपमेंट यूनिट (BDU) की बढ़ती क्षमता और उद्योग जगत द्वारा मंडल की माल ढुलाई सेवाओं में जताए जा रहे विश्वास को दर्शाती है। इस रैक में जितने रेफ्रिजरेटेड कंटेनर लोड किए गए हैं, उनका कुल वजन 1061.81 टन है तथा इससे 6.57 लाख का राजस्व प्राप्त हुआ है। इन कंटेनरों में M/s हाईफन इंडस्ट्रीज़, मैककेन इंडस्ट्रीज़ तथा बालाजी ग्रुप का नाजुक एवं शीघ्र नष्ट होने वाला माल शामिल है, जिसे समयबद्ध व नियंत्रित तापमान की आवश्यकता होती है।

एमएचपीएल प्राइवेट फ्रेट टर्मिनल से रीफ़र रैक संचालन की शुरुआत से क्षेत्र के निर्यातकों तथा कोल्ड-स्टोरेज आधारित उद्योगों को एक नई गति मिलेगी। यह अहमदाबाद मंडल की उद्योग विकास को समर्थन देने, माल सेवाओं का विस्तार करने तथा निर्बाध, सुरक्षित और कुशल लॉजिस्टिक्स प्रदान करने की प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है। यह उपलब्धि भारतीय रेल के अंतर्गत मंडल की सक्रिय पहल, नवाचार और सुदृढ़ फ्रेट इकोसिस्टम निर्माण के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में उभरती है।

सऊदी अरब की सड़क पर एक परिवार का अंत: भीषण हादसे में हैदराबाद के 18 रिश्तेदारों की एक साथ मौत, तीन पीढ़ियां खत्म

(जीएनएस)। सऊदी अरब में मक्का से मदीना के बीच बनी लंबी, शांत, फैलती हुई सड़क—जहाँ हर साल लाखों श्रद्धालु गुजरते हैं, जहाँ आत्माओं को सुकून और मन को शांति मिलने की कामना की जाती है—उसी रास्ते ने सोमवार की रात एक ऐसा मंजर देखा, जिसे याद कर कोई भी कांप उठे। रात के लगभग 1:30 बजे, जब दुनिया सोई हुई थी और बस में बैठे भारतीय श्रद्धालु गहरी नींद में थे, तब एक चीख, एक टक्कर और कुछ ही पलों में उठती आग की लपटों ने पूरी शांति को जला कर राख कर दिया। लोग नींद से उठे भी तो दर्द, चीत्कार और जीवन की आखिरी धड़कनों के बीच।

हादसा इतना भीषण था कि जिनकी तस्वीरें और वीडियो बाद में बाहर आए, उन्हें देखकर लोग भीतर तक हिल गए। पर इस त्रासदी की गहराई तब और बढ़ जाती है, जब यह पता चलता है कि मरने वालों में से 18 लोग एक ही परिवार के थे—एक पूरा वंश, तीन पीढ़ियाँ, एक ही बस में बैठकर उमराह के लिए निकली थीं, और बस की राख के साथ उनका भविष्य भी राख हो गया।

एक परिवार, एक सपना, एक यात्रा और फिर एक ही पल में सब खत्म

हैदराबाद के एक बड़े संयुक्त परिवार ने उमराह जाने की योजना महीनों पहले बनाई थी। परिवार में बुजुर्ग, जवान बेटे, बहुएँ, और छोटे-छोटे बच्चे—all ready to travel together. यह यात्रा उनके लिए सिर्फ धार्मिक यात्रा नहीं थी, बल्कि एक ऐसा अवसर था जिसमें वे पूरे परिवार के साथ समय बिताना चाहते थे, साथ बैठना, साथ खाना, साथ नमाज़ पढ़ना—और अल्लाह के पवित्र स्थानों पर एक-दूसरे के लिए दुआ माँगना चाहते थे।

वे मक्का में अपनी इबादत पूरी कर चुके थे। दिल में सुकून और चेहरे पर राहत थी। बस मदीना जाने की तैयारी थी, और सबको लग रहा था कि अब इस यात्रा का सबसे खूबसूरत हिस्सा शुरू होने वाला है।

कौन जानता था कि यहां से उनकी किस्मत एक अंधेरे मोड़ पर मुड़ चुकी थी।

हादसे के कुछ मिनट पहले बस के भीतर का दृश्य

बस में लगभग 54 यात्री बैठ सकते थे, लेकिन कुछ लोग किसी कारण बस में नहीं चढ़ पाए—शायद यही वजह उनकी जिंदगी की बचत बन गई। बाकी लोग सीटों पर थोड़ा लेटे, थोड़ा टिके हुए थे। थकान थी, लेकिन मन में संतुष्टि।

परिवार के 18 लोग एक साथ पीछे की ओर की सीटों पर थे। बुजुर्ग दादा-दादी अपनी बहुओं और पोते-पोतियों के साथ बैठे थे। बच्चे अपनी माँ की गोद में सो रहे थे। पुरुष हल्की-हल्की बातचीत करते हुए उनींदे हो रहे थे।

बस रात की सूनी सड़क पर तेजी से आगे बढ़ रही थी। एक भारी डीज़ल टैंकर विपरीत दिशा से आता हुआ अनियंत्रित हो गया। बस के चालक को कुछ समझने का मौका तक नहीं मिला। कुछ ही सेकंड में टैंकर बस पर चढ़ गया। टक्कर इतनी भीषण थी कि सामने का हिस्सा पल भर में कुचल गया और एक भयानक धमाके के साथ आग फैल गई।

बस के भीतर बैठे लोग नींद से ऐसे जागे, जैसे किसी ने उन्हें आग की भट्ठी में डाल दिया हो। सीटें जलने लगीं, खिड़कियाँ चटकने लगीं, डीज़ल की लपटें अंदर घुसने लगीं, और लोग चीखते हुए दरवाज़े की तरफ भागने लगे—but door jammed.

लपटें तेज़ हुईं। चीखें तेज़ हुईं। बच्चे रो रहे थे, महिलाएँ अपने परिवार को बचाने की कोशिश में जलती सीटों पर गिर रही थीं।

शोएब की आँखों के सामने पूरा परिवार खत्म हो गया

इस परिवार में एक लड़का था—शोएब। गहरी चोटों के बावजूद वह बस की टूटी खिड़की से कूदकर किसी तरह बाहर निकल पाया। उसके भीतर इतनी ताकत नहीं थी कि वह जलती बस की ओर लौट सके। वह बाहर खड़े बस को आग के गोले में बदलते हुए देखता रहा, पर भीतर उसके ख़ून के रिश्तेदार—उसके दादा, उसकी माँ, उसके भाई, उसके छोटे भतीजे—सब उस आग में खो रहे थे।

लोगों ने बताया कि शोएब दर्द से अधिक सदमे में था। डॉक्टरों को बताया कि उसने अपने सामने पूरे परिवार को खत्म होते देखा, लेकिन खुद बाहर निकल आया।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने तुरंत अधिकारियों को सक्रिय किया, विदेश मंत्रालय से संपर्क करने को कहा, और यह सुनिश्चित करने को कहा कि मृतकों के शव जल्द भारत लाए जाएँ।

लेकिन शासन की कार्रवाइयाँ केवल औपचारिक राहत दे सकती हैं—उस टूटे परिवार की नहीं, जिसने अपने घर में 18 शवों की प्रतीक्षा करनी है।

जब यह खबर हैदराबाद पहुँची, तो पूरे इलाके में खामोशी छा गई। जिन गलियों में त्योहार जैसा माहौल था क्योंकि उनका परिवार उमराह पर गया था, आज वहां मातम पसरा है। लोग एक-दूसरे को सांत्वना दे रहे हैं, मगर कोई समझ नहीं पा रहा कि एक ही झटके में पूरा परिवार कैसे खत्म हो गया।

उनका घर खाली पड़ा है, कमरे चुप हैं, बरामदे में खिलौने वैसे ही पड़े हुए हैं जैसे बच्चे उन्हें छोड़कर गए थे। कपड़े अलमारी में वैसे ही टंगे हैं, जैसे अभी पहनकर वापस आएंगे।

यह सिर्फ एक सड़क हादसा नहीं—यह एक गहरी, असहनीय, पूरी पीढ़ी को खत्म कर देने वाली मानवीय त्रासदी है। यह याद दिलाती है कि कितना भी सुरक्षित सफर हो, कितना भी पवित्र स्थान क्यों न हो—जिंदगी की डोर बहुत नाज़ुक है, और नियति कब किस दिशा में मोड़ दे, कोई नहीं जानता।

मक्का से मदीना की राह पर उस रात हवा में गूँजती चीखें, जलती बस की आग और उसमें खोते रिश्तों की कहानी हमेशा के लिए सऊदी की उस सड़क पर छप गई है।

और हैदराबाद में, एक घर में, तीन पीढ़ियों की अनकही कहानियाँ हमेशा के लिए मौन हो गईं।

दूल्हे के घर में गूंजने थी शहनाई, सुबह उठी चीख-भाभी ने दो बेटियों संग दी जान, खुशियों का माहौल मातम में बदला

(जीएनएस)। उरई। जालौन जिले के कोंच क्षेत्र के दाढ़ी गांव में सोमवार की सुबह एक ऐसी दिल दहला देने वाली खबर लेकर आई, जिसने पूरे गांव को सदमे में डाल दिया। जिस घर में आज शहनाई बजनी थी, उसी घर से तीन चिताओं का धुआँ उठ गया। शादी की तैयारियों और खुशियों के बीच परिवार को ऐसा गहरा घाव मिला, जिसकी भरपाई शायद कभी नहीं हो सकेगी।

सुबह करीब पांच बजे घर के आँगन में अफरातफरी मच गई, जब 30 वर्षीय आरती ने अपनी दोनों बेटियों—सात वर्षीय पीहू और दो वर्षीय दृष्टि—के साथ खुद पर डीज़ल उड़ेलकर आग लगा ली। चीख-पुकार सुनकर दौड़े परिजन आग बुझाने की कोशिश करते रहे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। आरती और बड़ी बेटी पीहू की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि छोटी दृष्टि को गंभीर हालत में झांसी मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, जहां

उसने भी दम तोड़ दिया।

परिवार ने बताया कि रात में आरती और उसके पति देवेंद्र के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ था। तनाव इतना बढ़ गया कि आरती ने बेटियों को साथ लेकर कमरे में खुद को बंद कर लिया। किसी ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि वह इतना खौफनाक कदम उठा लेगी।

घर में देवर जितेंद्र की शादी की तैयारियाँ पूरे जोर-शोर से चल रही थीं। सुबह घर में हल्दी की रस्म होनी थी, पर इसी बीच यह त्रासदी ने पूरे परिवार की खुशियों को राख में बदल दिया। जो रिश्तेदार कुछ घंटे पहले हँस-हँसकर तैयारी कर रहे थे, वही अब तीन शवों के सामने फफक-फफककर रो रहे थे। सूचना मिलते ही कोंच सीओ परमेश्वर प्रसाद पुलिस बल के साथ मौके पर पहुँचे। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। पुलिस ने कहा कि घटना की वास्तविक वजह जानने के लिए सीसीटीवी फुटेज की जाँच की जाएगी और पति-पत्नी के बीच हुए रात के विवाद के बारे में भी विस्तृत पूछताछ की जाएगी।

गाँव के लोग स्तब्ध हैं। सुबह जिन द्वारों पर शादी की रस्मों के गीत गूंज रहे थे, वहाँ अब सिर्फ सन्नाटा और मातम पसरा है। तीन मासूम जिंदगियों के इस तरह बुझ जाने से पूरे इलाके में गहरा दुःख और चिंता फैल गई है।

अमेरिका से पहली बार आएगी एलपीजी भारत–अमेरिका ऊर्जा रिश्तों में नया मोड़

(जीएनएस)। नई दिल्ली की सुबह अपने सामान्य सरकारी दफ्तरों की चहल-पहल से अलग एक ऐसी खबर लेकर आई, जिसने न केवल ऊर्जा बाज़ार को, बल्कि वैश्विक आर्थिक गलियारों को भी नया संकेत दिया। भारत ने पहली बार अमेरिका से एलपीजी आयात करने का ऐतिहासिक फैसला किया है। यह सिर्फ एक व्यापारिक लेन-देन नहीं, बल्कि बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों, ऊर्जा सुरक्षा की नई रणनीति और विश्व अर्थव्यवस्था में भारत की बढ़ती भूमिका का प्रतीक बनकर सामने आया है।

भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की तीनों प्रमुख तेल कंपनियाँ — इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम — कई महीनों की बातचीत, बैठकें, मूल्यांकन और जोखिम आकलन के बाद आखिरकार अमेरिकी खाड़ी तट से 22 लाख टन एलपीजी खरीदने पर सहमत हुईं। यह आंकड़ा अपने आप में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत के कुल वार्षिक एलपीजी

आयात का लगभग दसवां हिस्सा होगा। वर्ष 2026 में जब यह पहली खेप भारत की बंदरगाहों पर उतरेगी, तब ऊर्जा सहयोग का यह अध्याय इतिहास में दर्ज हो चुका होगा। केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सोशल मीडिया पर इसे "भारत–अमेरिका ऊर्जा सहयोग का नया दौर" कहा। उनके शब्दों में वह आश्वस्ति भी थी, जो ऊर्जा क्षेत्र के दीर्घकालिक योजनाकारों से लेकर घरेलू उपभोक्ता तक महसूस कर सकते हैं। भारत का एलपीजी उपभोग पिछले एक दशक में तेजी से बढ़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में उज्ज्वला योजना के प्रसार और शहरी मध्यम वर्ग में स्वच्छ ईंधन की बढ़ती मांग ने एलपीजी को देश की ऊर्जा प्रणाली में एक अनिवार्य स्तंभ बना दिया है।जब भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने अमेरिका के बेलविव्यू प्राइसिंग बेंचमार्क को आधार मानकर अनुबंध पर सहमति जताई, तब यह सिर्फ एक मात्र दाम का सौदा नहीं था। इसके पीछे वह रणनीति थी जो बताती है कि भारत अब अपनी ऊर्जा निर्भरता के स्रोतों को और अधिक विविध बनाना चाहता है। रूस से तेल आयात पर लग रहे अंतरराष्ट्रीय दबाव, अमेरिका द्वारा निर्यात पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने की चर्चा और बदलती वैश्विक राजनीति ने भारत को नए रास्तों की तलाश में धकेला है। ऐसे में अमेरिका से एलपीजी आयात का यह अनुबंध भारत की ऊर्जा सुरक्षा नीति का स्वाभाविक विस्तार लगता है।

लेकिन इस घोषणा के पीछे एक और कहानी भी छिपी है। अमेरिका के खाड़ी तट पर स्थित एलपीजी निर्यातक पिछले कुछ वर्षों से एशियाई बाजारों की तरफ देख रहे थे, पर भारत की ओर से कोई बड़ा खरीद अनुबंध सामने नहीं आया था। अब जब भारतीय पीएसयू कंपनियां सीधे अमेरिकी बाज़ार से जुड़ चुकी हैं, तो इसका प्रभाव सिर्फ कीमतों पर नहीं, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर भी पड़ेगा। विशेषज्ञ मानते हैं कि यह अनुबंध भविष्य में भारत को बेहतर मूल्य खोजने और अन्य सप्लायरों पर सौदेबाजी की क्षमता बढ़ाने में मदद करेगा। भारत की इस पहल को कई लोग अमेरिका के साथ संबंधों में बढ़ती गर्माहट के संकेत के रूप में भी देख रहे हैं। भले ही व्यापारिक मतभेद या टैरिफ से जुड़ी चुनौतियाँ दोनों देशों के बीच बनी हुई हैं, फिर भी ऊर्जा क्षेत्र हमेशा संतुलन और सहयोग का सबसे मजबूत आधार रहा है।

लोभ की दीवार पर ढही रिश्तों की नींव: पत्नी और देवर ने मिलकर पति को छत से धक्का दिया, बेंगलुरु में युवक की दर्दनाक मौत

(जीएनएस)। बेंगलुरु के अंदराहल्ली क्षेत्र के मंजूनाथ लेआउट में रविवार की रात ऐसा दृश्य सामने आया, जिसने रिश्तों पर भरोसा करने वाले हर व्यक्ति को भीतर तक हिलाकर रख दिया। एक पत्नी, जिसने अपने पति की जिंदगी के हर सुख-दुख में साथ देने का वादा किया था, उसी पत्नी ने अपने ही देवर के साथ मिलकर पति की हत्या की साजिश रच डाली। वजह—महज़ एक घर, कुछ लाख रुपए और लालच की अंधी भट्टी जिसने सबकुछ जला डाला। मृतक वेंकटेश, जो अपने जीवन की दूसरी पारी पत्नी पार्वती के साथ बिताने की कोशिश कर रहा था, नहीं जानता था कि उसकी ही छत एक दिन उसकी मौत की वजह बनेगी। दस साल पहले पहली पत्नी से अलग होने के बाद वेंकटेश ने पार्वती से छह साल पहले विवाह किया था। शुरू में संबंध सामान्य चले, लेकिन जल्द ही पार्वती ने वेंकटेश पर दबाव बनाना शुरू कर दिया—घर उसके नाम कर दिया जाए या फिर छह लाख रुपये दे दिए जाएँ। वेंकटेश ने न पैसे देने की इच्छा जताई, न घर का नाम बदलने की। आखिरकार पत्नी की ज़िद

के सामने उसने 2.5 लाख रुपये देने का प्रस्ताव रखा, पर तनाव बढ़ता गया।

घटना वाली रात दोनों के बीच फिर झगड़ा हुआ। वेंकटेश गुस्से में आकर रात नौ बजे पार्वती को घर से बाहर निकाल देता है। लेकिन यह वही पल था जिसके बाद चीजें भयावह रूप लेने लगीं। पार्वती ने बाहर निकलते ही अपने देवर रंगास्वामी को बुलाया। दोनों फिर घर लौटे और वेंकटेश को ऊपर छत पर ले जाकर धक्का दे दिया। वेंकटेश गंभीर रूप से घायल होकर नीचे गिर पड़ा। लेकिन मौत का यह खेल यहीं नहीं रुका—पार्वती ने नीचे आकर उसके सिर पर दोबारा हमला किया, जिससे वेंकटेश ने वहीं दम तोड़ दिया।

आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद ब्यादराहल्ली पुलिस मौके पर पहुँची। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। दोनों आरोपियों—पत्नी पार्वती और उसके देवर रंगास्वामी—को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि हत्या की जड़ वास्तव में केवल घर और पैसे का विवाद था या इस रिश्ते में कोई और गहरी दरारें थीं, जिनका अंत इतना भयावह हुआ। मंजूनाथ लेआउट की गलियों में अब भी उस रात की चीखें और भाग-दौड़ की आवाजें गूंज रही हैं। पड़ोसी दहशत में हैं कि किस तरह एक परिवार का लालच एक ज़िंदगी को खत्म कर सकता है। लोगों का कहना है कि वेंकटेश की मौत सिर्फ एक हत्या नहीं, बल्कि रिश्तों पर पड़े उस धब्बे की कहानी है जहाँ भरोसे की जगह लालच ने ले ली और घर की चारदीवारी एक खतरनाक रणभूमि बन गई। पूरा इलाका सदमे में है—जहां लोग सोचने पर मजबूर हैं कि आखिर घर जैसा शब्द, जो सुरक्षा और प्रेम का प्रतीक माना जाता है, वही एक मौत का सौदा कैसे बन गया।

राहुल गांधी मानहानि प्रकरण की सुनवाई फिर टली, अब 26 नवंबर को होगी अगली तारीख

(जीएनएस)। सुलतानपुर से आई एक महत्वपूर्ण कानूनी खबर में कांग्रेस नेता और रायबरेली के सांसद राहुल गांधी से जुड़े मानहानि मामले की सुनवाई सोमवार को एक बार फिर स्थगित हो गई। एमपी-एमएलए विशेष न्यायालय में निर्धारित कार्यवाही गवाह की अनुपस्थिति के कारण आगे नहीं बढ़ सकी, जिसके चलते अदालत ने अगली सुनवाई की तारीख 26 नवंबर तय कर दी है।

सोमवार को अदालत में पेश हुए राहुल गांधी के अधिवक्ता काशी प्रसाद शुक्ला ने बताया कि वादी पक्ष के गवाह रामचंद्र दुबे अनुपस्थित थे और उनकी ओर से स्थगन का प्रार्थना पत्र भी दिया गया। गवाहों की गैरहाजिरी के चलते अदालत में जिरह शुरू नहीं हो सकी और कार्यवाही बिना प्रगति के समाप्त हो गई।

यह पूरा मामला वर्ष 2018 का है, जब कर्नाटक विधानसभा चुनाव के दौरान राहुल गांधी ने उस समय भाजपा अध्यक्ष रहे और वर्तमान में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ कथित रूप से "अभद्र टिप्पणी" की थी। सुलतानपुर के हनुमानगंज क्षेत्र निवासी भाजपा नेता विजय मिश्रा ने इस टिप्पणी को अपनी और पार्टी की मानहानि बताते हुए राहुल गांधी के खिलाफ मुकदमा दायर किया था। पांच वर्षों तक चली सुनवाई में कई बार राहुल गांधी के कोर्ट में उपस्थित न होने पर दिसंबर 2023 में तत्कालीन न्यायाधीश ने उनके खिलाफ वारंट जारी किया था। इसके बाद फरवरी 2024 में राहुल गांधी ने स्वयं अदालत में उपस्थित होकर आत्मसमर्पण किया था, जिसके उपरांत उन्हें 25-25 हजार रुपये के दो मुचलकों पर जमानत मिल गई।

अदालत में जुलाई 2024 को राहुल गांधी ने अपना बयान भी दर्ज कराया था। उन्होंने अपने बयान में खुद को निर्दोष बताते हुए कहा था कि यह मुकदमा राजनीतिक द्वेष का परिणाम है और इसमें किसी प्रकार की मानहानि का उद्देश्य नहीं था।

इसके बाद अदालत ने वादी पक्ष को अपने गवाह पेश करने के निर्देश दिए। अब तक केवल एक गवाह की जिरह पूरी हो सकी है, जबकि दूसरे गवाह से जिरह शुरू हुई ही थी कि हड़तालों और बार-बार गवाहों के अनुपस्थित रहने से कार्यवाही लगातार धीमी पड़ती चली गई।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि परिसर की दुकानें खाली होंगी: हाईकोर्ट के फैसले ने बदली विवाद की दिशा

(जीएनएस)। प्रयागराज से आई एक महत्वपूर्ण खबर ने मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि परिसर से जुड़े दशकों पुराने विवाद को नई दिशा दे दी है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उन तीन दुकानदारों की याचिका खारिज कर दी है, जो वर्षों से परिसर में बनी दुकानों पर कब्ज़ा किए हुए थे और लगातार यह दावा कर रहे थे कि वे किराया कानून के तहत संरक्षित किरायेदार हैं। लेकिन अदालत ने स्पष्ट शब्दों में उनके दावों को नकारते हुए कहा कि यह संपत्ति एक सार्वजनिक धार्मिक एवं चैरिटेबल ट्रस्ट की है, इसलिए इस पर उत्तर प्रदेश किराया कानून लागू नहीं होगा।

यह फैसला न केवल इन तीन दुकानों के लिए निर्णायक साबित हुआ है, बल्कि उन अन्य दुकानों के लिए भी संकेत है जिनके विवाद अभी निचली अदालत में लंबित हैं। अदालत में सुनवाई के दौरान यह तथ्य सामने आया कि मथुरा का श्रीकृष्ण जन्मस्थान परिसर महज एक आम संपत्ति नहीं है, बल्कि इसका ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। 1944 में महामना मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से इस स्थल के पुनरुद्धार की नींव रखी गई थी। इसके बाद 1951 में 'श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट' की स्थापना हुई और 1958 में इसे संचालित करने के लिए

'श्री कृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान' को जिम्मेदारी दी गई। संस्थान ने समय-समय पर परिसर में दुकानों का निर्माण कराया और उन्हें सिर्फ 11 महीने की लाइसेंस अवधि के लिए दुकानदारों को उपयोग हेतु दिया। लाइसेंस खत्म होने के बाद भी कई दुकानदार परिसर खाली करने को तैयार नहीं हुए। वर्षों तक यह विवाद चलता रहा और 2000 से 2002 तक संस्थान ने ऐसे कई कब्जाधारकों के खिलाफ बेदखली के मुकदमे दायर किए।

किरायेदारों ने अदालत में यह तर्क रखा कि सेवा संस्थान न तो धार्मिक है, न चैरिटेबल, इसलिए किराया नियंत्रण अधिनियम के तहत उनकी सुरक्षा बनी रहनी चाहिए। उन्होंने संस्थान के सचिव कपिल शर्मा द्वारा दायर मुकदमों की वैधता पर भी सवाल उठाए। लेकिन अदालत ने सभी दस्तावेजों की गहन समीक्षा के बाद साफ कर दिया कि संस्थान का उद्देश्य धार्मिक, आध्यात्मिक और जनकल्याण से जुड़ा है, इसलिए इसे सार्वजनिक धार्मिक एवं चैरिटेबल श्रेणी में रखा जाएगा। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया कि संस्थान के नियमों में सचिव और संयुक्त सचिव मुकदमे दायर करने के अधिकृत अधिकारी हैं और इस पर कभी किसी सदस्य ने आपत्ति नहीं जताई। हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद तीनों दुकानदारों की याचिकाएं समाप्त हो गईं और अब परिसर की दुकानें खाली कराने की प्रक्रिया तेज होगी। अदालत ने निचली अदालत को निर्देश दिया है कि परिसर की दो अन्य दुकानों—पद्मा राघव और हरिश राघव के वारिसों—से जुड़े विवादों का निपटारा भी दो महीने के भीतर किया जाए।

दिल्ली में निर्माण कार्यों पर पूरी रोक की याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज की

(जीएनएस)। नई दिल्ली: राजधानी में बढ़ते वायु प्रदूषण के बीच निर्माण कार्यों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को खारिज कर दिया। मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि निर्माण गतिविधियों को पूरी तरह रोकना लाखों लोगों की आजीविका पर गंभीर असर डाल सकता है। कोर्ट ने इस प्रकार के कठोर कदम उठाने से पहले व्यापक और संतुलित समाधान पर विचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग पहले ही आवश्यक कदम उठा रहा है। कोर्ट ने केंद्र सरकार को पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान सरकारों के साथ बैठक कर

दीर्घकालिक रणनीति तैयार करने के निर्देश भी दिए। इसके तहत केंद्र को एक दिन के भीतर हलफनामा दाखिल करना होगा, जिसमें यह बताया जाएगा कि दिल्ली में प्रदूषण मापन के लिए मौजूद उपकरण पर्याप्त हैं या नहीं।

पीठ ने कहा कि न्यायालय विशेषज्ञ एजेंसियों का स्थान नहीं ले सकता। पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। इसलिए निर्माण कार्यों पर पूरी रोक लगाने से पहले इसके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का व्यापक मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 19 नवंबर को निर्धारित की है। इस सुनवाई में कोर्ट को हलफनामा और केंद्र सरकार के प्रदूषण नियंत्रण के लिए उठाए गए कदमों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की जाएगी। दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण ने राजधानीवासियों के स्वास्थ्य पर असर डाला है। कोर्ट ने केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश दिया कि वे प्रदूषण नियंत्रण के लिए दीर्घकालिक रणनीति बनाएं और इसे प्रभावी रूप से लागू करें। निर्माण कार्यों पर तत्काल रोक लगाने के बजाय यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रदूषण नियंत्रण के उपाय संतुलित और व्यावहारिक हों।

शादी से कुछ घंटे पहले मौत का साया: प्यार, जुनून और गुस्से के टकराव में खत्म हुई सोनी की जिंदगी, क्यों बना 'साजन' कातिल?

(जीएनएस)। गुजरात के भावनगर में बीते दिनों एक ऐसी घटना हुई जिसने पूरे क्षेत्र को हिला दिया। यह घटना सिर्फ एक हत्या की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस प्रेम संबंध का अंत है जिसने समाज और परिवार के विरोध के बावजूद खुद को विवाह के बंधन में बाँधने की ठानी थी। सोनी हिम्मत राठौड़ और साजन बरैया की डेढ़ वर्ष लंबी प्रेम कहानी उस दिन खत्म हो गई जिस दिन दोनों शादी के बंधन में बंधने वाले थे। सोनी उस सुबह तैयारियों में लगी हुई थी। घर में रौनक थी, रिश्तेदारों की आवाजें थीं, कहीं कोई फूल सजा रहा था तो कहीं मेहंदी की खुशबू अभी भी महसूस हो रही थी। सोनी ने अपने हाथों में चूड़ियां पहनीं, आईने में खुद को निहारा और अपने नए जीवन की कल्पना की। समाज और परिवार दोनों ही इस रिश्ते के खिलाफ थे, लेकिन सोनी और साजन ने एक-दूसरे का हाथ थामने का फैसला दृढ़ता से किया था। लेकिन शादी से कुछ ही घंटे पहले एक तुच्छ सी बात ने इस प्रेम कहानी को खून में

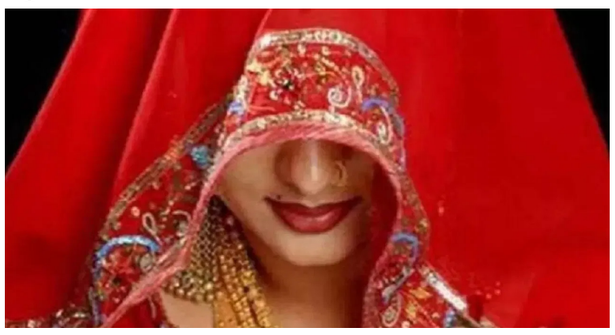

बदल दिया। पुलिस के अनुसार बहस की शुरुआत एक साड़ी की कीमत को लेकर हुई। यह बहस धीरे-धीरे बढ़ती गई। साजन गुस्से में बेकाबू हो गया। उसकी आंखों पर जैसे गुस्से का पर्दा आ गया था और उसने घर में रखी लोहे की रॉड उठा ली।

सोनी कुछ समझ पाती या बचाव कर पाती इससे पहले ही साजन ने उस पर तेजी से और बेरहमी से वार कर दिया। सोनी लड़खड़ाकर गिरी, लेकिन साजन का गुस्सा थमा नहीं। उसने सोनी का सिर दीवार से दे मारा। वार इतने गहरे और खतरनाक थे कि वहीं उसकी मौत हो गई। क्षणभर में वह दुल्हन, जो अपने नए जीवन के सपने देख रही थी, घर की जमीन पर निर्जीव पड़ी थी। वहीं साजन, जिसे वह पति कहने वाली थी, हत्या कर भाग चुका था। पड़ोसियों ने बताया कि उसी सुबह उसकी उनसे भी कहासुनी हुई थी, जैसे कि किसी अनहोनी की चेतावनी।

पुलिस को सूचना दी गई। सोनी का शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया। घर का हर कोना इस दर्दनाक घटना का गवाह था। पड़ोसियों के अनुसार दोनों साथ रहते थे और परिवारों की नाराज़गी के बावजूद उन्होंने खुद अपनी दुनिया बसा ली थी। लेकिन दोनों के बीच आए दिन झगड़े भी होते थे, शायद तनाव बढ़ता जा रहा था।

सोनी के परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। जिस बेटी को लाल जोड़े में विदा करना था, अब उसकी अर्थी सज रही थी। उसका विवाह का जोड़ा अभी भी उस कमरे में टंगा था, जहां उसका मेहंदी लगा हाथ आज मृत पड़ा था।

पुलिस लगातार आरोपी साजन की तलाश कर रही है और दावा किया है कि उसे जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

यह घटना समाज के लिए एक दर्दनाक सबक है। प्रेम एक खूबसूरत एहसास है, लेकिन जब उसमें असुरक्षा, गुस्सा और असंयम जुड़ जाता है तो वह सबसे बड़ा विनाश भी बन सकता है।